एकांकी संचयन

(एकांकी संग्रह)

जगदीश प्रसाद मंडल

ISBN :978-93-80538-41-9

मूल्य: भा. रु. ५०/-

पहिल संस्करण : २०११.

श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-११...२

Typeset by: Umesh Mandal.

Distributor: *Pallavi Distributors*, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो.- ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

Ekanki sanchayan: collection of one-Act Plays by Jagdish Prasad Mandal.



जगदीश प्रसाद मण्डल १९४७

पिताक नामः स्व. दल्लू मण्डल, माताक नामः स्व. मकोबती देवी, जन्म स्थानः बेरमा, जि- मधुबनी, मातृक- मनसारा, घनश्यामपुर, जि- दरभंगा। सम्पर्क- बेरमा, तमुरिया, मधुबनी, मो. ०९९३१६५४७४२, प्रकाशीत कृति उपन्यास- (१) **मौलाइल गाछक फूल,** (२) **उत्थान-पतन,** (३) **जिनगीक जीत,** (४) **जीवन-मरण,** (५) **जीवन संघर्ष,** नाटक- **मिथिलाक बेटी,** कथा संग्रह- (१) **गामक जीनगी,** (२) **अर्द्धांगिनी... सरोजनी... सुभद्रा... भाइक सिनेह इत्यादि,** बाल प्रेरक लघुकथा संग्रह- **तरेगन,** एकांकी संग्रह- **एकांकी संचयन।**

सतमाए

कल्याणी

समझौता

१

एकांकी

सतमाए

विद्यालय। समए माघक 3 बजे। स्कूलक अग्नेय (आंगन)मे बुद्धिधारी बाबू (प्रधानाचार्य) विपत्तिबाबू (सहयोगी शिक्षक) कुरसीपर आ पुलकित (चपरासी) स्टूलपर बगलमे बैस गप-सप्प करैत।

बुद्धिधारी बाबू- आब विद्यालयमे नै मन लगैए। होइए जे कखन रिटायर भऽ जाइ। कखनो कऽ तँ एहनो भऽ जाइए जे भोलेनट्री रिटायरमेंट लऽ ली।

पुलकित- से किअए मासएब?

बुद्धिधारी- तहूँ तँ पनरह-बीस बर्खसँ संगे रहिते छह देखते छहक जे की मान-प्रतिष्ठा स्कूलोक आ शिक्षकोक छल आ अखन की अछि।

पुलकित- ऐ युगमे मान-प्रतिष्ठा लऽ कऽ धो-धो चाटब। भने दिन-राति दरमाहा बढ़बे करैए, सुखसँ जीबू।

बुद्धिधारी- *(कनडेरिये आँखिये पुलकित दिस देख)* तू जे सवाल उठेलह पुलकित ओ बड़-भारी अछि। मुदा प्रश्न तोहर छिअह तँए जबाब देब उचित भऽ गेल।

(जिज्ञासासँ विपतिबाबू बुद्धिधारी बाबूक नजरिपर आँखि गाड़ि मनकेँ असथिर कऽ सुनैक बाट तकऽ लगलाह)

पुलकित- मासएब, जहिना खेतक आड़ि-धुर बाढ़िक बेगमे विगड़ि जाइत तहिना भऽ गेल अछि।

(पुलकितक दोहराओल प्रश्नसँ बुद्धिधारी बाबूक मन आरो अमता गेलनि। मुदा धैर्यसँ शक्ति जगबैत)

बुद्धिधारी- पुलकित, जते सुख आ चैनसँ जीबए चाहैत छी ओते दुख आ बेचैनी बढ़ल जाइए। तोंही कहह जे बिना काजक बोइन जे भेटतह ओ अन्न देहमे लगतह।

पुलकित- *(धड़फड़ा कऽ)* से केना लगत। काजमे जते देह दुहाइत अछि ओते भूख जगै छै जते भूख जगै छै ओते अधिक अन्न पचै छै। देह थकबे ने करत तँ भूख कन्ना जागत। जँ भूख नै जागत तँ खाइक क्षुधा कन्ना हएत?

जेहन खाइ अन्न तेहन बने मन, जेहन बने मन, जते जगे अर्पण।

बुद्धिधारी- अपने विद्यालयक खिस्सा कहै छिअए। जै दिनमे एलौं ओइ दिनमे एगारह गोटे शिक्षक रही आ चारू किलास मिला कऽ साढ़े चारि साए विद्यार्थी रहए। साइंस, कौमर्स आ आर्ट तीनू फेक्लटी रहए।

पुलकित- चपरासी कतेक रहए?

बुद्धिधारी- *(मुस्की दैत)* एक्केटा। काजो कम रहए। अच्छा सुनह। सभ किलासमे सेक्शन चलैत रहए। अखन देखहक जे रजिष्टरमे छह सौ विद्यार्थी आ सत्तरह गोटे शिक्षक छी।

पुलकित- हँ, से तँ छी।

बुद्धिधारी- मुदा की देखै छहक जे आइ मात्र चर्तुदसी छी, ने शिक्षक ऐलाह आ ने छात्र।

पुलकित- छुट्टी दरखास आएल की नै?

बुद्धिधारी- एकोटा नै।

पुलकित- मासएब, ऐ बुढ़ाढ़ीमे कते माथा-पच्ची करब। भरमे-सरम अपन जिनगी आ परिवारकेँ देखियौ।

बुद्धिधारी- से उचित हएत?

पुलकित- रूइया जकाँ जे माथ धुनि-धुनि उड़ेबे करब तइसँ सीरक कन्ना बनत?

(विपति बाबूपर नजरि दैत)

बुद्धिधारी- एते दिन तँ नै कहलौं विपति बाबू किएक तँ साल नै लागल छल मुदा आब तँ सालसँ उपर भऽ गेल। एकटा बात पुछू?

विपति बाबू- एकटा किअए हजारटा पुछि सकै छी। जखन सभ दिन एकठाम रहै छी, एक पेशा अछि, तखन पूछैक लेल आदेशक की प्रयोजन?

बुद्धिधारी- अहाँ वियाह कऽ लिअ?

विपति बाबू- यएह जे दूटा बेटो-बेटी अछि।

बुद्धिधारी- मानै छी। मुदा ई कहू जे बेटा-बेटीक उम्र कते अछि?

विपति बाबू- अपने विद्यालयमे बेटा एगाढ़मामे पढ़ैत अछि आ बेटी नाइन्थमे।

बुद्धिधारी- *(आंगुरपर हिसाब जोड़ि)* चौदह-पनरह बर्खक बेटा आ बारह-तेहर बर्खक बेटी हएत?

विपति बाबू- करीब-करीब।

बुद्धिधारी- पान-सात बर्खमे बेटी सासुर चलि जाएत। जे हवा बनि रहल अछि ओइमे जँ बेटाकेँ इंजीनियर वा एम.बी.ए. नै कराएब सेहो नै बनत।

विपति बाबू- जँ से नै कराएब तँ हँसारते हएत। तइपर सँ इहो दोख लागत जे माए मरिते बेटा-बेटीकेँ विपति कुभेला करै छै।

बुद्धिधारी- *(किछु सोचैत)* कहलौं तँ ठीके। मुदा जँ अपना काजमे कमी नै आनब तँ लोक बाजत किअए। कहुना तँ पच्चीस-तीस हजार महिना उठैबते छी। असानीसँ सभ काज चला सकै छी।

विपति बाबू- *(मुड़ी डोलबैत)* एक तरहक विचार अछि।

बुद्धिधारी- *(नमहर साँस छोड़ैत)* ई भार हमरा उपर रहल। जहिना एक-एक समस्या डोरीक सूत जकाँ बाँटल अछि तहिना ओकरा खोलि कऽ उघारि-उघारि सोझराबए पड़त।

पुलकित-	*(फड़कि कऽ)* मासएब, कँटहो बाँस तँ लोके काटि कऽ घरमे लगबैए आ ई कोन ओझरी छिऐ।
बुद्धिधारी-	एक आदमीक समस्या (ओझरी) कतेकोकेँ ओझरबैत अछि। तँए औगता कऽ किछु बाजि देब वा करैले डेग उठा देब, अनुचित हएत। *(घड़ी देख कऽ)* सवा तीन बजिये गेल। काजो नहिये जकाँ अछि। चाभी लऽ कऽ क्लासोक कोठरी आ ऑफिसो बन्न कऽ दहक।
	(पुलकित चाभीले बढ़ए लगल। दुनू गोटे कुरसीपर सँ उठि गेलाह। दुनू कुरसियो आ स्टूलो ऑफिसमे रखि कोठरी बन्न कऽ पुलकित अबैत अछि।)
बुद्धिधारी-	विपति बाबू, अहाँक जिनगी देख मनमे उदिग्नता उठि रहल अछि।
विपति बाबू-	किअए?
बुद्धिधारी-	अपना सभ समाजक उच्च श्रेणीक रहितो जिनगी आ मनुष्यक रहस्य नै बुझि रहल छी। जे सहजे निम्न श्रेणीक (बौद्धिक) छथि ओ केना बुझत। जँ से नै बुझत तँ अमती काँट जकाँ ओझरी (जिनगीक) केना छोड़ा पाओत?
विपति बाबू-	*(मुड़ी डोलबैत)* बड़ गंभीर बात कहलौं।
बुद्धिधारी-	सदैत इच्छा रहैए जे सबहक परिवार नीक जकाँ फड़ै-फुलाइ मुदा से कहाँ भऽ पबैए। जहिना आगू बढ़ल चिन्ता ग्रस्त (दुखी) तहिना पछुआएल। आखिर एना होइ किअए छै?
पुलकित-	मासएब, अनेरे मन भरिओने छी। हँसि-खेल जिनगी गुदस कऽ ली सभसँ नीक।
	(पुलकितक बात बुद्धिधारीक करेजकेँ आरो बेध देलकनि। मुदा कोढ़मे चोट लगने असीम दरदो होइत तँ मुँहसँ हसियो फुटैत।)
बुद्धिधारी-	*(मुस्की दैत)* पुलकित, औझका दरमाहा तँ फोकटेमे भेल किने?

पुलकित- फोकटमे कन्ना भेल। भरि दिन बरदाएल जे रहलौं।

बुद्धिधारी- अच्छा चलह संगे, तोरे ऐठाम चाह पीब।

पुलकित- दुआर पर तँ नहिये पीयाएब दोकानमे जरूर पीया देब।

बुद्धिधारी- से किअए?

पुलकित- घरवारी व्रत केने छथि। ओ तँ अनेरे पेटकान लधने हेती। तइपर चाह बनबए कहबनि। बाढ़नि सूप छोड़ि आरो किछु भेटत।

बुद्धिधारी- तखन तँ तोहर घरवाली बड़ धर्मात्मा छथुन?

पुलकित- सोलहन्नी। बिना धरमत्मेक भरि दिन खटै छी आ दरमाहा हुनका हाथ पड़ै छन्हि।

बुद्धिधारी- धर्मो कते रंगक होइए?

पुलकित- मासएब, अहीं मुँहे ने सुनने छी, जते रंगक लोक तते रंगक धरम। कियो कोदारि पाड़ि पसिना चुबा धरम-करम (धर्म-कर्म) बुझैए, तँ कियो बम-गोली लऽ धर्म-कर्म बुझैए। कर्म तँ दुनू करैए।

दोसर दृश्य-

“विपति बाबूक दरबज्जा। सुलक्षणी माए आ शिव कुमार (विपति बाबूक बेटा) दरबज्जापर बैसल।”
(बुद्धिधारी, विपति बाबू आ पुलकितक प्रवेश। सुलक्षणीकेँ गोड़ लगैत बुद्धिधारी। उठि कऽ ठाढ़ होइत सुलक्षणी कुरसीकेँ आँचरसँ झाड़ैत।)

सुलक्षणी- ऐपर बैसू। (बुद्धिधारीकेँ बैसते) बाल-बच्चा सभ आनन्दसँ छथि किने?

बुद्धिधारी- भगवानक कृपासँ सभ आनन्दित अछि।

सुलक्षणी- भगवान नीक करथि। एहिना सभ दिन परिवार फुलाइत-फड़ैत रहए।

बुद्धिधारी- एकटा विचार लेल एलौं?

सुलक्षणी- हम कोन जोकरक छी जे अहाँकेँ विचार देब। तखन तँ जे बुझै छी सएह ने कहब।

बुद्धिधारी- विपति बाबूकेँ बड़ कष्ट होइ छन्हि। तँए विचार भेल जे ओ दोसर वियाह कऽ लथि।

सुलक्षणी- *(कने काल चुप रहि)* जहिना बेटा विपति अछि तहिना अहूँकेँ बुझै छी बौआ। तँए बजैमे धड़ी-धोखा नै होइए। हमर आशा कते दिन? वृद्ध भेलौं, कखन छी कखन नै, तेकर कोनो ठेकान नै अछि।

बुद्धिधारी- तँए ने विचार करैक जरूरत अछि।

सुलक्षणी- दुनियाँमे ने सभ मनुक्ख एक रंग अछि आ ने एक रंग चालि-चाढ़ि छै। नीको छै अधलो छै। *(कहि चुप भऽ जाइत)*

बुद्धिधारी- अहाँक विचार की अछि?

सुलक्षणी- के अपन परिवारकेँ उजड़ैत-उपटैत देखए चाहत।

बुद्धिधारी- अपन जे अखन परिवार अछि, ओ केना लहलहाइत रहत अइले ने विचारैक जरूरत अछि?

सुलक्षणी- विपति हमर बेटा छी आ शिवकुमार पोता छी। दुनू कन्ना नीक-नहाँति जिनगी बिताओत सएह ने मनमे अछि। पोती तँ पाँच वर्खक बाद सासुर जाएत।

बुद्धिधारी- *(मूड़ी डोलबैत)* हँ, कहलौं तँ नीके, मुदा.....?

सुलक्षणी- मुदा की?

बुद्धिधारी- मुदा यएह जे जहिना पोखरिमे करहर-सौरखीक जनमौटी गाछक पात पकड़ि ओरिया कऽ गाछ पकड़ि जड़िमे (निच्चामे) पहुँच उखाड़ल जाइत अछि तहिना केलासँ परिवारक कल्याण हएत।

सुलक्षणी- बौआ, अहाँक बात नै बुझलौं?

बुद्धिधारी- परिवारमे जते गोरे छी सबहक जिनगीक डोर पकड़ि-पकड़ि ठढ़ धड़बऽ पड़त। तखने जा कऽ सुढ़िऐत।

सुलक्षणी- *(मूड़ी डोलबैत)* कहलौं तँ ठीके मुदा समाजो तँ तेहन अछि जे नीक-अधला बात बाजि मनकेँ घोर कऽ दैत अछि। जइसँ लोकक विचारमे धक्का लगै छै। *(कहि चुप भऽ जाइत)*

(बिचहिमे पुलकित)

पुलकित- मासएब आ चाची, दुनू गोरेकेँ कहै छी। विपति भाय एकबतरिये हेता। हमर जे घरवाली मरल रहैत तँ ककरोसँ पुछबो ने कैरतिऐ आ दोहरा कऽ वियाह कऽ नेने रहितौं।

(पुलकितक बात सुनि)

बुद्धिधारी- *(हँसैत)* पुलकित, परिवारक संग समाजोक विचार करए पड़ै छै।

पुलकित- समाजकेँ अपने ठेकान नै छै। नीकोकेँ अधला कहैत अछि आ अधलोकेँ नीक।

बुद्धिधारी- हँ, से तँ अछि।

पुलकित- (अपना विचारपर जोर दैत) मासएब, जे समाज ककरो घर नै बना सकैए ओकरा कोन अधिकार छै जे ककरो घर उजाड़ै।

बुद्धिधारी- कहलह तँ ठीके मुदा धड़फड़मे किछु करबो तँ सब नीके नै होइत अछि। अधलो भऽ सकैत अछि।

पुलकित- हँ, से तँ होइतो अछि।

बुद्धिधारी- तँए ने विचारक जरूरत अछि। तू तँ विपति बाबूक परेशानी देख धाँय दे बजलह। तोरह विचार कटैबला नै छह।

पुलकित- एक बेर आरो चाह पीबू तखन मन आरो खनहन हएत। जइसँ झब दे रस्ता भेटत।

(पुलकितक बात सुनि)

विपति बाबू- बौआ (शिवकुमार) चाह बनौने आबह। पुलकितक कपमे कनी बेसी कऽ चीनी देने अबिहह।

पुलकित- हम की आन दुआरे चाह पीबै छी मीठे दुआरे पीबै छी की। जावतो जीबै छी तावतो जँ हँसी-खुशीसँ नै जीयब तँ अनेरे जीबिये कऽ की करब।
(चाह अबैत अछि सभसँ पहिने पुलकितेक कप बढ़बैत अछि।)

बुद्धिधारी- हमरो कपक चाह कनी पुलकितमे ढारि दहक।

पुलकित- ऍंह, मासएब केहेन गप बजै छी। अनकर हिस्सा खाएब से पचत।

बुद्धिधारी- *(हँसैत)* हमरा आन बुझै छह?

पुलकित- नै मासएब, मुँहसँ निकलि गेल। अच्छा कनी ढारि दियौ।

(चाह पीब पान खा)

बुद्धिधारी- चाची, विपति बाबू जँ दोसर वियाह करथि तँ अहाँकेँ कोनो विरोध नै ने?

सुलक्षणी- नै। आब हमरा की चाही। वस एतबे ने जे पाँच कर भोजन आ पाँच हाथ वस्त्र भेटैत रहए।

बुद्धिधारी- वाउ, शिवकुमार, अहाँ मनमे की बनैक (पढ़ैक) विचार अछि?

शिवकुमार- अखन तँ हाइये स्कूलमे छी। मुदा मनमे अछि जे चाहे इंजीनियरिंग वा एम.बी.ए. पढ़ी।

बुद्धिधारी- बहुत बढ़िया। मुदा जखन इंजीनियर वा एम.बी.ए. करबह तखन तँ नोकरी करए कारखाना वा शहर-बजार जेबह। परिवारो (पत्नी) जेथुन।

(शिवकुमार गुम भऽ जाइत अछि)

बुद्धिधारी- चुप किअए भेलह। बाजह।

शिवकुमार- हँ।

बुद्धिधारी- बात तोंही कहह जे दादी मरि जेथुन, तों परिवारक संग शहर चलि जेबह, बहिन सासुर चलि जेतह, ऐठाम विपति बाबूक दशा की हेतनि?

शिवकुमार- मासएब, अहाँ बाबूक संगियेटा नै छियनि, गुरूओ छी। अपने जे कहब शिरोधार्य अछि।

बुद्धिधारी- विपति बाबू, दुनियाँमे मनुष्य खराब नै होइत अछि। ओकरा बनबैमे नीक-अधला होइ छै। जइसँ नीक-अधला बनैत अछि।

पुलकित- हँ, से तँ होइ छै।

बुद्धिधारी- माएक लेल बेटा-बेटीक लेल पिता आ पत्नीक (विवाहक बाद) लेल पति बनि आगूक जिनगी बना जीब। यएह अंतिम बात अछि। पुलकित एकटा कनियाँ ताकह।

तेसर दृश्य-

तेतरी आ खजुरिया बिपरीत दिशासँ अबैत बाटपर भेँट।

खजुरिया- फुल कतऽ दौड़ल जाइ छी। पाएरपर पाएर नै पड़ैए?

तेतरी- की कहब फुल, देखियौ जे सूर्ज सिरपर आबि गेल, अखैन तक भानस नै चढ़ैलौं। अपने (पति) नहाइले गेल हेता भानस चढ़ेबे ने केलौं।

खजुरिया- किअए ने अखैन तक भानस चढ़ेलौंहेँ?

तेतरी- की पुछै छी फुल, *(मुस्की दैत)* रजकुमराकेँ देखियौ जे पहिलुका *(विआही)* बौह छोड़ि कऽ अबलट लगाकेँ चलि गेल छेलै जे ऐहेन पुरूखसँ खनदान नै बढ़त। जखैन ओ (रजकुमरा) चुमौन कऽ लेलक तखैन फेर घुरि कऽ अपने फुरने चलि आएल।

खजुरिया- चलि एलै तँ राखि लिअ। जहिना अबलट लगा पड़ाएल जे ऐ पुरूखसँ खनदान नै बढ़तै तहिना कमाएत-खाएत अपन रहत। जखैन रहेक मन हेतै रहत जाइक मन हेतै जाएत। तइले एते मत्था-पच्ची करैक कोन जरूरत छै?

तेतरी- जेहने खेलाड़ि मौगी छै तेहने रजकुमरा अपने अछि। हँसि-हँसि बजैत रहैए तँए बुझै छिऐ। नमरी अछि, नमरी।

खजुरिया- ओइ पाछु अहाँक भानसक अबेर किअए भऽ गेल। झगड़ा ककरो आ काज छुटि गेल अहाँकँ?

तेतरी- नून आनए दोकान विदा भेलौं आकि हल्ला सुनलिऐ, भेल जे ककरो किछु भऽ गेलै। ससरि कऽ गेलौं तँ यएह रमा-कठोला देखलिऐ। ओही लटारममे लागि गेलौं।

खजुरिया- फेर भेलै की?

तेतरी- की हेतै। मन दुनूक लसिआएल बुझि पड़ल। मुदा हारल तँ दुनू अछि। लाजे लोक लगमे की बाजत तँए दुनू अनकर मन पतिअबै छै। अखैन जाए दिअ फुल। निचेनमे सब गप कहब।

खजुरिया- भानस हेबे करतै मुदा अधा गप कहि कऽ छोड़ि देलिऐ। अखैनसँ पेटमे उनटैत-पुनटैत रहत। अनका पुरूख जकाँ कि हिनकर पुरूष छन्हि जे मुँह अलगौतनि?

तेतरी- मुँह जे अलगौत से कोनो सपेत कऽ। कमा कऽ हाथमे आनि दै छथि मुदा नूनसँ हरैद धरि तँ हमरे जोरह पड़ैए। भरि दिन दौड़ैत-दौड़ैत तबाह रहै छी।

खजुरिया- एकटा गप सुनलिऐहेँ?

तेतरी- की? नै!

खजुरिया- गाममे नै छेलखिन?

तेतरी- गाममे कि कोनो एक्केटा गप चलैए जे सभ एक्के गप सुनत? रंग-विरंगक गप पुरवा-पछवा जकाँ सदिखन चैलते रहैए कि?

खजुरिया- अखैन इहो अगुताएल छथि आ हमरो काज सभ अछि। कखनो निचेनमे दुनू फुल गप कऽ लेब।

तेतरी- तोहुँ हद करै छह। आ जे बिसरि जा?

खजुरिया- एहनो गप विसरल जाइए।

तेतरी- हँ, तँ विसरल जाइए कि? आ जे अहूसँ निम्मन गप आबि जाए तँ हल्लुक गप लोक विसरिये जाइए किने?

खजुरिया- हँ, बेस कहलथि। मुदा खरिआइर कऽ नै कहबनि। उपरे-झापरे कहि दै छियनि।

तेतरी- हँ, सएह कहह।

खजुरिया- पढ़ि-लिखि कऽ तँ आरो लोक गाम घिनबैए।

तेतरी- से की?

खजुरिया- ऍंह, की कहबनि?

तेतरी- नै-नै, कनी फरिया कऽ कहू।

खजुरिया- बिपैत मासटर दोसर वियाह करताह?

तेतरी- तँ ई कोन बड़-भारी बात भेल। वेचाराक स्त्री मरि गेलनि भानस-भातमे दिक्कत होइत हेतनि।

खजुरिया- ऍंह, एहिना बुझै छथिन।

तेतरी- से की?

खजुरिया- आइ जँ बेटा-बेटी नै रहितनि तखैन जँ करितथि तँ एकटा सोहनगर होइतै। जखैन बेटा-बेटी ढेरबा-जवान भेल तखैन किअए करै छथि।

तेतरी- *(मुँह बन्न केने)* हूँ।

खजुरिया- हमरा काकाकेँ देखलखिन। बेचारेकेँ तँ एक्केटा बेटी भेलनि आ काकी मरि गेलनि। कतबो लोक हिला-डोला कऽ रहि गेल तैयो मानलखिन।

तेतरी- हँ, से तँ बेस कहलौं।

तेतरी- *(कनी काल चुप रहि)* हूँ...।

खजुरिया- भानसो भातक दिक्कत कि होइ छन्हि। अखैन हाथी सन माइयो छेबे करनि, बेटियो भानस करै जोकर भइये गेलनि तखैन किअए करै छथि। पुरूखक

किरदानी बुझबै।

तेतरी- अपने फुरने करै छथि आकि घरोक लोकक विचार छन्हि?

खजुरिया- ऍंए, हद करै छी। अहाँ नै देखै छिऐ जे आबक बेटा-बेटी माए-बापसँ केहेन पुछै छै।

तेतरी- से तँ ठीके कहै छी। मुदा सभ की एक्के-रंग होइए। हमरे घरबला छथि, मरैयौ बेर तक माइयेक कहलमे रहला। बेटो ने मनाही केलकनि।

खजुरिया- बेटा कि मनाही करतनि। चुमौन कऽ कऽ कनी घर आबए दियौ तखैन ने हुरयाहा देखबै। जहिना बुढ़ीकेँ अतर-गुलाबसँ मालिश करतनि तहिना ने बेटो-बेटीकेँ टेमपर खाइले देतनि।

तेतरी- सभ सतमाए की एक्के रंग होइए। ने सभ वियौहती नीके होइए आ ने सभ समदाही अधले होइए। पुरूखे की सभ एक्के रंग होइए?

खजुरिया- हँ, से तँ बेस कहलौं। मुदा ओहिना नै ने लोक बजैए।

तेतरी- से बाजह। गामेमे सोनमाकेँ देखै छिऐ। जहियासँ समदाही एलै तहियासँ घरमे लछमी आबि गेलै। से तँ मनुक्ख-मनुक्खपर छै।

खजुरिया- मुदा नीके औतनि तेकर कोन बिसवास?

तेतरी- से तँ ठीके।

खजुरिया- मुदा..?

तेतरी- मुदा की? यएह ने जे जेहेन परिवारक लोक रहत तेहने ने नवका मनुक्ख बनत।

खजुरिया- ई की विपति मासटरकेँ बुझै छथिन?

तेतरी- हम तँ नीके बुझै छियनि।

खजुरिया- घुइयाँ पुरूखक चालि यएह बुझथिन। मूड़ी गोंति कऽ चललासँ हेतनि। महकारी जकाँ पुरूख होइए। तरे-तर तना ने बिठुआ काटि लेतनि जे बुझबे ने करथिन।

तेतरी- जाए दियौ नीक की अधला अपना परिवारमे हेतनि तइसँ हमरा-हिनका की?

खजुरिया- हमरा की? एना किअए बजै छी। गाम की हमर नै छी जे जेकरा जे मन फुड़तै से करत आ टुटुर-टुटुर देखैत रहब।

तेतरी- अनकर झगड़ा मोल लेब।

खजुरिया- किअए ने लेब? झगड़ाक डर करब तँ एक्को दिन गाममे बास हएत।

तेतरी- *(आँखि उठा कऽ उपर दिस देख)* बड़ अबेर भऽ गेल। आइ बात-कथा सुनबे करब।

खजुरिया- एकटा बात तँ कहबे ने केलियनि?

तेतरी- की?

खजुरिया- ढोरबा फेर चुमौन केलकहेँ।

तेतरी- ओकरा तँ मारे धियो-पुतो आ घरोवाली छइहे?

खजुरिया- *(विहुँसैत)* छठम छऐ।

तेतरी- निरलज्जा-निरलज्जी सभ सभ उठा कऽ पीब नेने अछि। जहिना पुरूखक धनमंडल अछि तहिना मौगीक। एकरा सभले रौदी-दाही अबिते अछि।

चारिम दृश्य-

(चिन्तामणिक दरबज्जा)

चिन्तामणि- *(स्वयं)* हे भगवान अधमरू जिनगीमे किअए फँसौने छी। अइसँ नीक जे मौगैत दिअ। आशाकेँ जते हृदेसँ लगबए चाहैत छी ओते ओ पिछड़ि-पिछड़ि हटैत जाइए आ जिनगीकेँ अन्हार बनौने जाइए। अपनो भ्रम भेल जे आशा-निराशा (अन्हार-इजोत) केँ शब्दकोषक शब्द मात्र बुझलिऐ। मुदा आइ बुझि रहल छी जे खाली शब्दकोषेक शब्द नै जिनगी छी। एते दिन माइयो बापक उत्तरी गरदनिमे लटकने घर-घरारी उपटैत छल मुदा आब तेसरो उत्तरी लटकए लगल। खाइर, जे जिनगी देलह ओ तँ भोगबे करब। मुदा मरैयो बेर तक माछी जकाँ नाकपर नै बैसऽ देब। जाधरि (जाबे आँखि तकै छी तकै छी बन्न हएत-हएत)

(पुलकितक प्रवेश)

चिन्तामणि- अहाँ के छी, किनकासँ काज अछि?

पुलकित- आदर्श स्कूलक चपरासी छी, बुद्धिधारी बाबू पठौलनि अछि।

चिन्तामणि- *(आँखि उपर उठबैत)* के....। बुद्धिधारी बाबू। आदर्श स्कूलक शिक्षक। ओ तँ हमरा नै जनैत छथि, फेर.....।

पुलकित- पता चललनि जे चिन्तामणि बाबूकेँ कन्या छन्हि। जँ ओ कन्याक वियाह विपति बाबूक संग करए चाहथि तँ....?

चिन्तामणि- विपति बाबू...।

पुलकित- हँ-हँ। ओहो सहयोगिएक रूपमे काज करै छथि।

चिन्तामणि- ओ अविवाहिते छथि।

पुलकित- नै। पत्नी मरि गेलखिन। दोहरा कऽ करताह।

चिन्तामणि- *(व्यग्र होइत)* दोहरा कऽ करताह। सौतीनक तर तँ नै भेल। मुदा दोती बरसँ कुमारि कन्याक विआह....। की अपन बेटीक भरि-भरि दिनक उपासक पूजाक फल भगवान यएह देलखिन। मुदा उपाइये की? मृत्युकाल साधारण खढ़ोक आशा पाबि चुट्टी धारक धारामे उगैत-डूबैत जान बचाइये लैत अछि। आशा भेट रहल अछि। बाउ, उमेर कते छन्हि?

पुलकित- हम दुनू गोरे एक बत्तरिये छी। घरो एक्केठीन अछि।
(पुलकितकेँ निच्चासँ उपर माथ धरि निहारि-निहारि चिन्तामणि देखै छथि)

चिन्तामणि- बालो-बच्चा छन्हि?

पुलकित- हँ। एकटा बेटा एकटा बेटी छन्हि।

चिन्तामणि- तखन दोहरा कऽ किअए वियाह करताह?

पुलकित- माए बूढ़े छन्हि, वियाहक बाद बेटी सासुरे बसए लगतनि। नँउऐ-कौंउऐ कऽ बचलनि बेटा। बेटो सभ तेहेन ढाठी धऽ लेलक जे ओइसँ नीक बेटिये। जे कमसँ कम पावनि-तिहारमे नै सनेस तँ वेनो पठेबे करैए। तँए जुगक अनुकूल अपन-अपन आशा बना जिनगी चलबैत रही।

चिन्तामणि- नीक-नहाँति अहाँक बात नै बुझलौं?

पुलकित- अपने पढ़ल-लिखल नै छी मुदा संगत पाबि किछु बुझल अछि। आगू बढ़ैक होड़मे समाज बिखंडित भऽ रहल अछि जइसँ गामक दशा दिनानुदिन गिरले जा रहल अछि।

चिन्तामणि- *(मूड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ भाइये रहल अछि।

पुलकित- अहीं कहू जे किसान परिवारमे जन्म लेनिहार किसान बनैत छलाह। पूर्वजक लगौल फुलवाड़ीकेँ कोर-कमठौनक संग पानि ढारैत छलाह जइसँ समाजक हरीयरी बढ़ैत रहल। मुदा कल-कारखाना दिस घुसकि समाजक (गामक) घर खसा रहल अछि। एहेन स्थितिमे की कएल जाए।

चिन्तामणि- बाउ, अहाँ चपरासी छी?

पुलकित- हँ। मुदा विपति बाबूक लंगोटिया संगी सेहो छी। हमर माए-बाप गरीब छलाह, नै पढ़ौलनि। ओ (विपति बाबू) बी.ए. पास कऽ कऽ हाइ स्कूलमे शिक्षक बनलाह। मुदा बच्चेसँ जहिना रहलौं तहिना अखनो छी।

चिन्तामणि- बेटा नै बेटी छी तँए जिनगीक प्रश्न अछि। ओना विआह लेल डेग उठबैमे ने कोनो बाधा अछि आ ने संकोच। मुदा जते अधिकार हमरा अछि तइसँ मिसियो कम माएकँ नै छन्हि। तँए डेग उठबैसँ पहिने हुनको पूछि लेब जरूरी अछि। (जोरसँ) कतऽ छी कनी सुनि लिअ?

(सावित्रीक प्रवेश)

सावित्री- की कहलौं?

चिन्तामणि- *(मुस्कुराइत)* तीन सालक चिन्ता हेट भऽ रहल अछि।

सावित्री- *(विहुँसैत)* से की? से की?

चिन्तामणि- गीताक वियाहक सूहकार आएल अछि। कने बुझने-सुझने अबै छी। जँ किछु धएल-धड़ल विचार हुअए तँ अखने कहि दिअ।

सावित्री- राखल जोगाएल विचार की रहत। पेटीमे राखल पुरान साड़ी जकाँ तरेतर सभ गुमसरि गेल। पहिरै जोकर नै रहल। मुदा तैयो तँ कहबे करब जे नोर बहबैत बेटी सरापे नै।

चिन्तामणि- अहाँ अर्द्धांगिनी छी जेकर आड़िपर बेटा-बेटीक गाछ होइ छै। कोनो बात (विचार) जोर दऽ कऽ हँ नै कहाएब। अखन समए अछि तँए मनसँ विचार देब तखने डेग उठाएब।

सावित्री- बरक विषएमे किछु कहि दिअ?

पुलकित- शरीरसँ पूर्ण स्वस्थ, हाइ स्कूलमे शिक्षक छथि। धतपत तीस-पेंइतीसक अवस्था हेतनि। पहिल कनियाँ पैछला साल मरि गेलनि। तँए परिवारक लेल दोहरा कऽ वियाह करब जरूरी छन्हि।

सावित्री- नौकरी करै छथि, तहूमे शिक्षक छथि। ई तँ दीब बात भेल। जाधरि नोकरी करै छथि ताधरि तलब भेटतनि आ छुटलाक (रिटायर) उत्तर पेन्शन। *(मुस्की दैत)* पाँच कर अन्न आ पाँच हाथ वस्त्रक दुख गीताकँ नै हएत। गामक नाओं कहू?

पुलकित- धरमपुर।

सावित्री- गामो तँ दुसैबला नहिये अछि। लगो अछि। जाबे जीब ताबे आवा-जाही रहबे करत। *(पतिसँ)* एक-दूटा बात विचारणीय अछि।

चिन्तामणि- *(व्यग्र)* से की, से की?

सावित्री- जहाँ धरि उमेरक बात अछि ओहो परमपराक अनुकूले अछि। राजा दशरथ तीनटा वियाह केने रहथि। किअए केने छलाह? अही दुआरे ने जे पहिल कन्याँसँ सन्तान नै भेलनि। प्रश्न अछि जे सन्तानक प्रतीक्षामे दस वर्ष समए लगले हेतनि?

चिन्तामणि- कने सोझरा कऽ कहियौ?

सावित्री- सन्तान नै हेबाक घोषणा (निर्णए) दस वर्ष पछातिये ने होइत छै। तै बीच तँ ओकर प्रतिकार होइ छै। जोग-टोनसँ लऽ कऽ दवाइ-विड़ोमे दस वर्ष लगिये जाइत अछि।

चिन्तामणि- हँ, से तँ होइते अछि।

सावित्री- पहिलसँ तेसर पत्नीक बीच पनरह-बीस बर्ख लगिये जाइत अछि। ऐ हिसावसँ लड़का (बर) उपयुक्त छथि। दोसर प्रश्न अछि दोसर पत्नीक।

चिन्तामणि- हँ, से तँ अछिये।

सावित्री- दोसर पत्नी तँ ओतऽ अधला होइत अछि जतऽ सौतीन बनि जिनगी चलैत। से तँ नहिये अछि। रहल बच्चाक सतमाए होएब? सासुक लेल तँ पुतोहूए हएत।

चिन्तामणि- *(मूड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ अछिये?

सावित्री- ई तँ नीके भेल।

चिन्तामणि-		कोना?

सावित्री-		*(हँसैत)* जहिना गुरूसँ श्रेष्ठ सतगुरू होइत छथि तहिना।

चिन्तामणि-		नै बुझलौं?

सावित्री-		माएसँ श्रेष्ठ सतमाए ऐ लेल श्रेष्ठ होइत जे माए अपन (कोखिक) सन्तानक सेवा करैत (पालैत-पोसैत) जहन कि सतमाए दोसराकेँ। जँ आन बच्चाक सेवा अपन बच्चा सदृश्य कियो करैत तँ वएह ने सतमाए भेली।

चिन्तामणि-		मुदा.....?

सावित्री-		हँ। अपना समाजमे सतमाएकेँ सौतिनिया डाहक प्रतीक बुझल जाइत अछि। ठाम-ठीम अछियो। मुदा (सत-माए) सतमाए तँ ओ भेली जे अपने बच्चा जकाँ दोसरोक बच्चाकेँ बुझि सेवा करए।

चिन्तामणि-		*(ठहाका मारि)* आगू बढ़ै छी।

अंतिम दृश्य-

(चिन्तामणिकेँ पुलकित स्कूलक अग्नेयमे ठाढ़ कऽ विपति बाबू आ बुद्धिधारी बाबूकेँ बजा अनैत)
चारू गोटे बैसल।

बुद्धिधारी-		अपनेक नाओं?

चिन्तामणि-		लोक चिन्तामणि कहैए।

बुद्धिधारी-		अपनेकेँ कन्या छथि?

चिन्तामणि-		हँ।

बुद्धिधारी- *(विपति बाबूकेँ देखबैत)* यएह बर (लड़का) छथि। सहयोगी छथि। हिनक पत्नी पैछला साल मरि गेलखिन। बृद्ध माए आ दूटा बच्चा छन्हि। आब अपन विचार देल जाउ?

चिन्तामणि- विद्यालयक आंगनमे बैसल छी तँए कहै छी। ओना हम बड़ गरीब छी। उनैस-बीस बर्खक बेटी अछि। तीन सालसँ वियाहक बात मनमे नाचि रहल अछि मुदा कतौ नाकपर माछी नै बैस रहल अछि।

बुद्धिधारी- अपनेकेँ एको-पाइ खर्च नै हएत। विपति बाबू कमाइ छथि। सब खर्च करताह।

चिन्तामणि- केहेन बात बजै छी। ई कहू जे लाम-झामसँ बरिआती नै जाएत। मुदा अपना दरबज्जापर सँ बेटी जमाएकेँ पाँच हाथ नव वस्त्र पहिरा अरिआति कऽ विदा नै करब से केहेन हएत?

बुद्धिधारी- जहन संबंध स्थापित कए रहल छी तहन भेद किअए?

चिन्तामणि- जहिना आमक गाछकेँ दोसर गाछक डारिमे बान्हि कलम बनाओल जाइत अछि तहिना ने दू परिवार मिल बनैत अछि। मुदा दुनूक अपन-अपन गुण तँ रहिते अछि।

बुद्धिधारी- नै बुझलौं?

चिन्तामणि- हमर कन्या मिथिलाक ललना छी। एक बेर जै पुरूषसँ हाथ पकड़बैत अछि जिनगी भरि स्वामी, पति आ गुरूभक्त बनि सेवा करैत अछि। कहियो अपन सीमाक उल्लंघन नै करैत अछि। भलहिं राम सन बेटाकेँ पिता बनवास दऽ देलखिन मुदा कौशल्या बात कहाँ कटलकनि।

बुद्धिधारी- से की?

चिन्तामणि- यएह जे रामपर जते अधिकार पिता दशरथक छलनि तइसँ कम तँ माए कौशल्याक नै छलनि। मुदा कहाँ अपन अधिकारक प्रयोग केलनि। आँखि मुनि सुहकारि लेलकनि।

बुद्धिधारी- *(नमहर साँस छोड़ैत)* विपति बाबूक परिवार अलग छन्हि। जेहने अपने छथि तेहने माए छथिन। दुनू बच्चा तँ गाइयोक बच्चासँ कोमन आ सुशील अछि।

चिन्तामणि- भाग्य हमरा बेटीक जे लगौल फुलवाड़ीक माली बनि सेवा करत।

अंतिम दृश्य, मिथिलाक वियाहक।

समाप्त।

२

एकांकी

कल्याणी

<u>पहिल दृश्य-</u>

(जहलक दृश्य। जेलक भीतरसँ जेलर, कल्याणी, प्रतिज्ञा आ दूटा सिपाही निकलैत। फाटकक बाहर आबि कल्याणीयो आ प्रतिज्ञो पाछु घुरि जहलकेँ निग्हारि-निग्हारि देखैत अछि।)

जेलर : अखन धरि हम जेलर आ अहाँ दुनू गोटे कैदी छलौं। मुदा आब जहिना अहाँ दुनू गोटे छी तहिना हमहूँ एकटा अदना मनुक्ख छी। जेलक जिम्मेदार होइक नाते कहै छी जे जँ किछु अभाव भेल हुअए ओ बिसरि जाएब। संगे इहो कहै छी जे पुन: कैदी बनि जहल नै देखी।

कल्याणी : *(मुस्कुराइत)* कहलौं तँ बड़ सुन्नर बात मुदा जइठाम एक्को इंच जमीन नारीक लेल सुरक्षित नै अछि तइठाम......?

जेलर : की सुरक्षित?

कल्याणी : सुरक्षित यएह जे नारीक लेल स्वतंत्र जिनगी कल्पनाक सिवा आरो की अछि। जाधरि नारी अपन शक्तिकेँ जगा संघर्ष नै करत ताधरि मनुष्यक जिनगीसँ उतड़ि पशुक जिनगी जीबैक लेल बाध्य रहबे करत। तँए जरूरत अछि अपन शक्ति नारी जगतक लेल उपयोग करए। जखने आजादीक लेल डेग उठौत तखने अहाँक जेल आगू ऐबे करत।

प्रतिज्ञा : कते दिन जहलक डरे नारी अपन स्वतंत्र जिनगीकेँ बान्हि कऽ राखि सकैए। जेम्हर देखू तेम्हर नारीपर अत्याचारे-अत्याचार जहिना घरक भीतर तहिना घरक बाहर। सगतरि एक्के रामा-कठोला भऽ रहल छै। घरसँ निकलिते कतौ अपहरण तँ कतौ छेड़खानी सदतिकाल होइते रहैत अछि। एहेन स्थितिमे इज्जत-आबरूक संग जीब कहाँ धरि संभव अछि।

जेलर : *(मूड़ी डोलबैत)* किछु अंशमे अहाँ कहब मानल जा सकैत अछि।

कल्याणी : *(झपटि कऽ)* किछु अंशमे किअए कहै छिऐ हँ, ई बात जरूर जे जहिना सभ मनुष्यक जिनगी समान नै अछि तहिना अत्याचारोक अछि। मुदा जेहन माहौल बनल अछि ओइसँ की आभास भेट रहल अछि।

जेलर : *(नम्हर साँस छोड़ैत)* खैर, हमर ओकातिये कते अछि जे अहाँक सभ प्रश्नक उत्तर दऽ सकै छी। मुदा एते जरूर आग्रह करब जे पुन: जहलक आँखि नै देखी।

कल्याणी : जँ जहलक डर करब तँ जिनगी केना भेटत। हँ, ई बात जरूर जे छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ सैकड़ो घेराक बीच जहलो एकटा घेरा छी। मुदा ओकरा टपैक तँ दुइये टा उपाए अछि। या तँ कूदि कऽ टपि जाय वा तोड़ि दिअए।

जेलर : *(मूड़ी डोलबैत)* धिया-पूताक खेल नै छी।

कल्याणी : मानै छी जे धिया-पूताक खेल नै छी मुदा अहूँ सुनि लिअ जे जै पौरूष पाबि नर पुरूष कहबैक अधिकारी बनल अछि ओ सिर्फ पुरूषेक नै नारियोक धरोहर सम्पदा छी। अखन धरि नारी जगतक नजरि ओइ दिशा दिस नै बढ़ल अछि तँए आँखि मूनि सभ अत्याचार झेल रहल अछि। जखने ओइ दिशा दिस देख आगू डेग उठौत तखने......।

जेलर : *(मुस्कुराइत)* हमर शुभकामना अहाँ सभक संग अछि।

(कल्याणी आ प्रतिज्ञा आगू बढ़ैत। दुनू सिपाही फाटकक भीतर प्रवेश करैत। बीचमे जेलर ठाढ़ भऽ कल्याणी दिस देखैत। दू डेग आगू बढ़ि कल्याणी पाछु घुरि कऽ तकैत। दुनूक - जेलर आ कल्याणी- आँखिपर आँखि पड़िते कल्याणी मुस्कुरा दैत। जेलर आँखि निच्चाँ कऽ लैत। पुन: कल्याणी आगू डेग उठबैत। जेलरो भीतर दिस प्रवेश करैत। एकटा पाएर भीतर आ एकटा पाएर बाहर रहिते पुन: कल्याणी दिस देखैत। तै काल कल्याणियो दुनू गोटे पाछु घुरि तकैत तँ जेलरपर नजरि पड़ैत।)

जेलर : *(दुनू हाथ जोड़ि)* अंतिम विदाइ।

कल्याणी : *(मुस्की दैत)* अंतिम विदाइ नै पहिल विदाइ। जाधरि अहाँक जहल रहत ताधरि एक नै हजरो बेर आएब।

(फाटक बन्न कऽ जेलर भीतर जाइत अछि। कल्याणी आ प्रतिज्ञा दू डेग आगू बढ़ि)

कल्याणी : अखन धरि जहिना अहाँ कओलेजक एकटा छात्रा छी तहिना हमहूँ छी। मुदा आब तँ पढ़ाइक अंतिमे समए छी। परीक्षो भइये गेल। रिजल्ट निकलत जिनगीक लीला शुरू हएत।

प्रतिज्ञा : जिनगिऐक लीला किअए कहै छी नावालिकक सीमा सेहो टपि गेलौं। जहिया जेल एलौं तहिया ने नावालिक छलौं। जइसँ देश आ समाजक प्रति ने कोनो अधिकार छलए आ ने कोनो कर्तव्य। मुदा से तँ आब नै रहल। ओना बालबोधे जे किछु केलौं ओहो कोनो अधला थोड़े केलौं।

कल्याणी : अखन धरि जे किछु भेल ओ बाल-बोधक खेल भेल। मुदा जहलक भीतर नावालिकक सीमा टपि वालिक भेलौं। १८वर्ष पूरा भेल। जिनगीक लेल आइ संकल्प ली जे जाधरि नरीक अन्याए होइत रहत ताधरि चैनक साँस नै लेब।

प्रतिज्ञा : अखन धरि ने अहाँकेँ ऐ रूपे हम चिन्हैत छलौं आ ने अहाँ हमरा चिन्है छलौं। तँए दुनू गोटे संकल्पक संग सप्पत ली जे जाधरि साँस रहत ताधरि संग-संग रहब।

कल्याणी : निश्चित। जे कियो ऐ धरतीपर जन्म नेने अछि सभकेँ स्वतंत्र रूपे जीवैक अधिकार छे *(किछु काल चुप भऽ)* सृष्टिक शुरूहेसँ देखैत छी जे जहिना ऋृषि भेलाह तहिना ऋृषिका सेहो भेलीह। *(पुन: रूकि)* संग-संग जिनगी बितैबतौं पुरूष नारीक संग भीतरघात करैत-करैत सकपंज कऽ देलनि। जेकर परिणाम भेल जे ओकर पहाड़ सदृश्य रूप बनि गेल अछि।

प्रतिज्ञा : *(मूड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ बनि गेल अछि। मुदा जहिना रसे-रसे बंधन सक्कत होइत गेल तहिना रसे-रसे तोड़ौ पड़त। एक्के बेर जँ सभ बंधनकेँ तोड़ए चाहब से संभव नै छै।

कल्याणी : *(मूड़ी डोलबैत)* ई तँ अछि। मुदा दुनियाँमे एहेन कोनो काज नै अछि जेकरा मनुष्य नै कऽ सकैत अछि। तहन ई बात जरूर अछि जे जे जेहन काज रहत ओहिक लेल ओइ तरहक शक्तिक जरूरत पड़ैत। तँए जरूरी अछि जे जहिना अखन हम दुनू गोटे मिल संकल्प लेलौं तहिना आरोकेँ जोड़ि शक्तिक अनुकूल डेग उठाएब।

प्रतिज्ञा : हँ, से तँ कहलो गेल अछि जे "जमात करए करामात।" जेना-जेना दुर्ग टपैत जाएब तेना-तेना शक्तियो बढ़ैत जाएत। जहिना बुन-बुन पानि मिल धरतीपर ससरि धारा बनि धारक आकार बना समुद्रक रूप ग्रहन करैत तहिना ने मनुष्योक होएत।

<u>दोसर दृश्य-</u>

(जहलक बाहरी छहरदेवाली टपि कल्याणी आ प्रतिज्ञा। दोसर दिससँ कल्याणीक भाए चन्द्रनाथ आ माए शान्तीकेँ देखैत तँ दोसर दिससँ शान्ती कल्याणीपर नजरि

अटकौने। जना शान्तीकेँ बघजर लगि गेल दुनू आँखिसँ नोट टघरैत। मुदा कल्याणी आ प्रतिज्ञाक मुँहसँ खिलैत माने फुलाइत फूल जकाँ हँसी निकलैत।)

कल्याणी : *(आगू बढ़ि)* माए, अहाँ कनै किअए छी? बेटी कोनो अधला काज कऽ जहल नै आइलि छलि। *(कहैत दुनू हाथे दुनू पाएर पकड़ि)* अहाँ असिरवाद दिअ। जहिना समाजक आन माएसँ हटि अहाँ पढ़ैक छूट देलौं तहिना हमरो दायित्व होइत अछि जे समाजक कल्याणक दिशामे आगू बढ़ी। जाधरि परिवारक डेग आगू दिस नै बढ़त ताधरि समाज कोनो बनत?

(दुनू बाँहि पकड़ि शान्ती कल्याणीकेँ उठबैत। कल्याणी उठि कऽ माइक दुनू आँखिक नोर दुनू हाथसँ पोछि आँखिपर आँखि गरा आगूमे ठाढ़ि। शान्तीक आँखिसँ धरती, पहाड़, समुद्रक रूप छिटकैत तँ कल्याणीक आँखिसँ सिंहक रूप छिटकैत)

चन्द्रनाथ : अहाँ सभ ताबे एतै अँटकू। एकटा सवारी नेने अबै छी। *(कहि भीतर जाइत)*

प्रतिज्ञा : चाची, आइ धरि नारी जगत, कमला-कोसीक धारक संग कारी मेघक बरखा सदृश्य अदौसँ नोर बहबैत आएल अछि मुदा जाधरि ओइ नोरकेँ बहैक कारणकेँ नै रोकल जाएत ताधरि बहब केना बन्न हएत? जहिना बेटी कल्याणी छी तहिना प्रतिज्ञो छी। असिरवाद दिअ।

शान्ती : *(माइक नजरिसँ नजरि मिला)* तूँ सभ जहल किअए ऐहल?

कल्याणी : परीक्षाक आखिरी दिन एक्केटा विषएक परीक्षा रहै। जे दोसर खेपमे माने दोसर सत्रमे रहै। चारि बजे समाप्त भेल। ओना प्रश्न हल्लुके बुझि पड़ल। जहाँ सवाल पढ़लौं आकि मन हल्लुक भऽ गेल। नीक जकाँ लिखलौं। डेरा अबैत रही आकि रस्तामे देखलिऐ........।

शान्ती : की देखहलक?

कल्याणी : आगू-पाछू विद्यार्थी (संगी) सभ डेरा अबैत रहै। हम दुनू गोरे (कल्याणी आ प्रतिज्ञा) पाछु रही। हमरासँ करीब चारि लग्गी आगू रूपा असकरे अबैत रहै। मोटर साइकिलपर एकटा युवक पाछूसँ जाइत रहै। रूपा लग आबि पहुँचते साइकिलेपर सँ देह परक ओढ़नी खींचि लेलक।

(ओढ़नी खिंचैक सुनि शान्ती चौंकि गेलि। जना बाँसक दू टुकड़ी रगड़सँ आगिक लुत्ती छिटकैत तहिना शान्तीक आँखिसँ लुत्ती छिटकल)

शान्ती : अँए, एते अन्याए?

प्रतिज्ञा : चाची, अहाँ गाम-घरमे रहै छी तँए नै दखै छिऐ। एहेन-एहेन अन्याए हजारक हजार रोज होइए।

शान्ती : राही-बटोही किछु ने कहै छै?

प्रतिज्ञा : की कहतै। निर्लज पुरूख नारीक लाज (इज्जत) थोड़े बुझैए। उ सभ तँ नारीकेँ खेलौना बनौने अछि। एक्के पुरूख अपन बहू-बेटीकेँ इज्जतक नजरिऐ देखैत अछि मुदा दोसराकेँ रण्डी-बेश्या बुझैत अछि।

(क्रोधसँ शान्ती थर-थर कँपए लगल। दुनू आँखि लाल भऽ गेलै)

शान्ती : तब की भेलै?

प्रतिज्ञा : बेचारी रूपा, आगू-पाछू ताकि, मूड़ी गोति आगू बढ़ैत गेल। मुदा हमरा दुनू गोरेकेँ नै देखल गेल। सड़कक कातेमे पीचक पजेबा उखड़ल रहै। दुनू गोटे पजेवा हाथमे लऽ दौड़ कऽ ओकरापर फेकलौं। एकटा तँ हूसि गेलै। मुदा दोसरक कपारमे लगलै।

शान्ती : वाह-वाह, भगवान हमरो औरूदा तोरे सभकेँ देथुन। भाँइमे कियो दादा हुअए। नारी-जातिक सान बचेलौं। तेकर उत्तर की भेल?

प्रतिज्ञा : ओ साइकिलपर सँ खसि पड़ल। कपारसँ खून गड़-गड़ चुबए लगलै। हल्ला भेलै। तखने ट्रैफिक पुलिस आबि कऽ दुनू गोटेकेँ पकड़ि पहिने थाना लऽ गेल। थानासँ जहल पठा देलक।

शान्ती : मुदा हम तँ दोसरे-तेसरे बात सुनलौं।

प्रतिज्ञा : की?

शान्ती : कते बाजब कोइ किछो तँ कोइ किछो बाजैए। एक गोरे कहलक जे दुनू गोटे परीक्षामे चोइर करैत पकड़ल गेल।

प्रतिज्ञा : चाची, झूठकेँ सत्य बनाएब आ सत्यकेँ झूठ बनाएब छुद्दर पुरूख सभक गुण छी। जहिना बहिन कल्याणीक माए छिऐ तहिना हमरो छी अहाँ लग झूठ बाजब।

शान्ती : *(किछु मन पाड़ैत)* बेटी प्रतिज्ञा, तूँ जे कहलह ओ अपनो मनमे अबैए। मुदा बिना पुरूखक मदतिऐ नारी जीब केना सकैए?

कल्याणी : *(उत्साहित भऽ)* माए बिना पुरूखक नारी जनकपुरमे। अखन धरि नारीकेँ पुरूख अन्हारमे रखलक। जैसँ ओकरा अपन सभ गुन हरा गेलइ। घरक भीतर रखि ओकरा दुनियाँक बात बुझै नै देलक। जैसँ ओ परती खेत नहाति सभ किछु रहितो पानि-बिहाड़ि, जाड़, रौद, भुमकमक चोटसँ निष्क्रिय भऽ गेल।

शान्ती : ऐ बातकेँ नारी किअए ने अखैन धरि बुझि रहल अछि?

कल्याणी : एकरो कारण छै। सृष्टिक निर्माण पुरूष नारीक संयोगसँ होइत अछि। जहिना गाड़ी, दू पहियासँ चलैत अछि, तहिना। मुदा नारीक पेटमे नअ मास रहि बच्चाक जन्म होइत अछि। ऐ दौरमे नारीकेँ कठिन कष्टक सामना करए पड़ैत अिछ। जेकर लाभ पुरूख उठौलक।

शान्ती : *(मूड़ी डोलबैत)* हूँ...।

कल्याणी : बच्चाक पालन खाली पेटे धरि नै जन्म लेलाक पछातियो होइत अछि। जइमे घेरा जाइत अछि। घेराइत-घेराइत एत्ते घेरा जाइत जे जिनगी बदलि गुलाम बनि जाइत अछि।

शान्ती : *(मूड़ी डोलबैत)* एहेन स्थितिमे नारी पुरूखक बराबरी केना कऽ सकैत अछि?

प्रतिज्ञा : *(उत्तेजित भऽ)* कए सकैए, चाची।

(सवारी लऽ कऽ चन्द्रनाथक प्रवेश)

चन्द्रनाथ : चलै चलू। सवारी आबि गेल।

तेसर दृश्य-

(अनन्त कुमारक घर। दरबज्जापर एकटा चौकी राखल आ बगलमे कुरसीपर अनन्त कुमार बैसि, आँखि बन्न केने)

अनन्तकुमार : (स्वयं) दिनो-दिन जिनगी जपाल भेल जा रहल अछि। जे दिन जे क्षण बीत रहल अछि ओ नरकक वास भऽ रहल अछि। मुदा मऽरबो तँ हाथमे नहियेँ अछि अपने हाथे आत्महत्यो केना कए लेब?

(चाह नेने शान्तीक प्रवेश। पतिक हाथमे कप पकड़बैत शान्ती चौकी बगलमे ठाढ़। एक घोट चाह पीबि अनन्त कुमार शान्ती दिस देख।)

अनन्तकुमार : जिनगी भार भऽ गेल। अकाजक अन्न सन देबकँ हत्या करैत छी। नीरस बिना रसक जिनगी कोकनल गाछ सदृश्य होइत अछि। जे पिल्लू, गराड़क घर बनि जाइत अछि तहिना जिनगी बुझि पड़ैए।

शान्ती : सोग केलासँ सोग थोड़े मेटाएत। सोग तँ समस्याकँ जनम दैए। जे बिना केने थोड़े मेटाएत?

अनन्तकुमार : जखने घरसँ निकलै छी तखने रंग-विरंगक अड़कच-बथुआ काचर-कुचर सुनए लगै छी। केकरा की कहियौ। कते लोकसँ माथ चटाउ। ककरो मुँहमे जाबी लगौनाइ असान छी।

शान्ती : कते दिन मूड़ी गोति समाजमे जीब?

अनन्तकुमार : नीक हएत जे झब दए कल्याणीक वियाह करा दिऐ। आन गाम गेलापर तँ लोकक बात नै सुनब। जहिना पोखरिक पानिक हिलकोर जे दू-चारि दिनमे शान्त भऽ जाइत छै तहिना असथिर भऽ जाएत।

(चन्द्रनाथक प्रवेश)

शान्ती : भने बउऔ आबिऐ गेल। दुनू बापूत छीहे विचारि कऽ रास्ता नकालि लिअ।

चन्द्रनाथ : *(अकचकाइत)* कथीक रास्ता माए? कोन एहेन दुर्ग टूटि कऽ खसि पड़ल जे बाबूकेँ हम विचार देबनि।

अनन्तकुमार : बौआ, नीक की बेजाए, अपना परिवारमे नै बाजब तँ कतए बाजब। जखने गाम दिस टहलै छी, सोझा-सोझी तँ नै मुदा अढ़ दाबि-दाबि मौगियो आ मरदो की बजैए तेकर कोनो ठेकान नै।

चन्द्रनाथ : की बजैए?

अनन्तकुमार : कियो बजैए जे कल्याणी जहल जा कुल-खनदानक नाक-कान कटौलक। तँ कियो बजैए जे केहन माए-बाप छै जे बेटीक वएस बीतल जाइ छै मुदा वियाह करैले नीने ने टुटै छै।

चन्द्रनाथ : बाबू, जहिना दिनक उनटा राति होइ-छै तहिना नीक अधलाक बीच सेहो होइ-छै ज्ञान-अज्ञानक बीच सेहो होइ छै। धरतीपर ओते अधलो अछि। हमरा बुझने तँ अधले बेसी अछि। किऐक तँ नीक एक्के तरहक होइ छै जहनकि अधला अनेको रंगक- रावण-कौरबक सखा जकाँ।

अनन्तकुमार : ततबे नै ने इहो बजैए जे पढ़ा-लिखा कऽ बेटी तेहन बना लेलक जे चौक-चौराह पुरूखे जकाँ मुँह-कान उधारि निधोख भाषणो करैए।

चन्द्रनाथ : बाबूजी, हमर बहिन कुम्हरक बतिया नै ने छी जे ओंगरी बतौने सड़ि जाएत। जँ कियो आँखि उठाओत वा ओंगरी बताओत तँ ओकर आँखियो फोड़ि देबै आ ओंगरिओ काटि लेबै। अपन माए-बहिन दिस देखह जे माटिक मुरूत बनौने अछि।

शान्ती : बौआ, हम दुनू परानी तँ पाकल आम भेलौं जाबे जीबै छी, ताबे जीबै छी। कखनी खसि पड़ब तेकर कोन ठीक। मुदा तूँ दुनू भाए-बहीनि तँ से नै छह। भगवान करथुन जे हँसैत-खेलैत शतायु हुअअ।

(कल्याणीक प्रवेश)

अनन्तकुमार : बेटी कल्याणी, तोरा सभले ओइ गीरहकेँ तोड़ि देलौं जै बंधनक बीच कन्या अज्ञानक काल-कोठरीमे जीबैत अछि।

कल्याणी : बाबूजी, जहिना अहाँ समाजमे पहिल डेग उठा नव फुलक गाछ रोपलौं तहिना अहाँक आत्मा एक नै अनेक फुलक फुलवाड़ी लगौत।

शान्ती : बेटी, भगवान हमरो दुनू बेकतीक औरूदा तोरे दुनू भाए-बहिनकेँ देथुन। जाबे बच्चा छेलह ताबे जतए धरि भऽ सकल सेवा केलियह। आब तँ तोरे सबहक दिन-दुनियाँ भेलह, हम सभ तँ अस्ताबल भेलौं।

कल्याणी : माए, नारीक संग अत्याचार करैत-करैत पुरूख एहेन अभियस्त भए गेल अछि जे उचित-अनुचितक सीमे समाप्त भऽ गेल छै। जैसँ नारी खसैत-खसैत एते निच्चाँ खसि पड़ल अछि जे स्वरूपे समाप्त भऽ गेल अछि।

अनन्तकुमार : *(मूड़ी डोलबैत)* हँ, से तँ भऽ गेल अछि।

कल्याणी : बाबू, ई दुनियाँ कर्मभूमि छी "वीर भोग्या बसुंधरा" जे जेहन कर्म करत ओ ओहन फल पाओत। जहिना डोरीक एक भत्ता अहाँ तोड़ि हमरा अन्हारसँ इजोतक रस्ता खोललौं। तहिना एक-एक भत्ता तोड़ि नारी जगतक बन्धन तोड़ि देबै।

अनन्तकुमार : बंधन तँ सक्कत अछि मुदा ओकरा तोड़नौं बिना तँ कल्याण नहियेँ अछि। मुदा ऐ लेल ज्ञान, साहस आ धैर्यक जरूरत अछि।

कल्याणी : *(मुस्की दैत)* पौरूष सिर्फ पुरूखे लेल नै नारियोक लेल विधाता देने छथिन। जरूरत अछि ओकरा पकड़ेक। हमहूँ आब नावालिक नै बालिक भेलौं ततबे नै किरिणक डोरसँ सुनि सेहो देख लेलौं। जहिना सृष्टिक विकासमे पुरूष-नारी समान अछि तहिना जाधरि दुनूक बीच समानता नै आओत ताधरि चैनक साँस नै लेब

अनन्तकुमार : बहुत कष्ट हएत?

कल्याणी : *(हँसैत)* "जीवन नया मिलेगा, अंतिम चिता मे जल के"। जहिना भिनसुरका सूर्ज देखने दिनक अनुमान होइत अछि तहिना तँ नवालिकक आड़ि हमहूँ जहलेमे टपलौं किने।

<u>**चारिम दृश्य-**</u>

(दरबज्जाक चौकीपर चद्दरि ओढ़ि, मुँह उधारने अनन्त कुमार पड़ल। पँजरामे शान्ती बैसल)

शान्ती : *(देह छुबि)* बोखारसँ देह जरैए आ अहाँ जिद्द बन्हने छी जे रदबज्जापर सँ अंगना नै जाएब।

अनन्तकुमार : आइ धरि परिवार अंगने भरि रहल मुदा कल्याणी सन बेटी कुलमे जन्म लेलक। जे आंगनसँ निकलि समाज रूपी परिवारमे रहए चाहैए, बाप होइक नाते हम दरबज्जो धरि नै अरिआति देबै।

शान्ती : कहलौं तँ ठीके मुदा माए-बाप, बेटा-बेटीकेँ जनमे ने दै छे करम तँ अपने काज करै छै।

अनन्तकुमार : हमरा ऐ परिवारक कोनो भार नै अछि जहिना बाबू दरबज्जा बना कए गेला तहिना अंतिम साँस धरि दरबज्जाक रक्षा माने मान-सम्मान करैत रहब।

(चन्द्रनाथक प्रवेश)

चन्द्रनाथ : *(अवितहि)* बाबू किअए, चद्दरि ओढ़ने छिऐ?

शान्ती : बोखारसँ आगि फेकै छन्हि। कतबो कहै छियनि जे पुरबा लहकै छी, चलू आंगन, से कहै छथि जे अंतिम समैमे दरबज्जापर प्राण छोड़ब। पुरबा-पछबाक काज छिऐ। बहनाइ, बह-अ।

चन्द्रनाथ : बाबू, जे बात अहाँ आइ बजलौं से पहिने कहाँ कहियो बाजल छलौं।

अनन्तकुमार : तोहर प्रश्नसँ हृदए जुरा गेल बौआ। माए छथुन तँ फुटल ढोल। भरि दिन पनचैती केने घुरतीह जे सभ शान्तीसँ मिल-जुलि कऽ रहू। मूदा जहिना शक्ति बढ़ल जाइत अछि तहिना हिनकर पनचैतियो बढ़ल जाइ छन्हि।

चन्द्रनाथ : *(ठहाका मारि)* हूँ-हूँ.....।

शान्ती : बुरहा तँ नीक-अधला सभ दिन कहलनि। जखन-जुआन रही तखन बरदास भेल आ आब तामस उठत। दुनियाँमे जँ कियो संग पुरलनि तँ सभसँ बेसी यएह ने पुरलनि। मुदा आब भगवान अन्याए केलनि जे पहिने हमरा नै ओछाइन छड़ौलनि।

अनन्तकुमार : नीक हेतह जे कल्याणियो कँ सोर पाड़ि लहक।

(चन्द्रनाथ भीतर प्रवेश। कल्याणीक संग मंचपर प्रवेश।)

कल्याणी : बाबू, किछु होइए?

अनन्तकुमार : नै।

शान्ती : की कहथुन। बोखारसँ देह जड़कै छन्हि।

कल्याणी : कोनो दवाइ नै देलहुन?

अनन्तकुमार : दवाइ खाइबला रोग नै छी बेटी। मनमे एते खुखी आबि गेल अछि जे सौंसे देह हँसैए।

कल्याणी : *(मने-मन सोचैत। मुँहक पोज सुख-दुखक यएह अवस्था छी)* माए किछु कहै छथि अहाँ किछु कहै छी? *(आवेशमे अबैत)* किअए बजेलौं?

अनन्तकुमार : कतए गेल छेलह?

कल्याणी : महिलाक एकटा बैसारक आयोजन करए चाहै छी जइमे विधवा समस्याक संबंधमे विचार करब।

अनन्तकुमार : ई तँ छोट समस्या छह। अखन नव उत्साह छह पैघ समस्याकँ नजरिमे रखि डेग उठाबह।

कल्याणी : *(विस्मित होइत)* केना ऐ समस्याकँ छोट समस्या कहै छिऐ।

अनन्तकुमार : भने तँ समाज दिस डेग उठेबे केलह, बुझवे करबहक। मुदा पहिने समाजकँ पढ़ए पड़तह। *(उठि कऽ बैसैत)* चद्दरि उताड़ि सिरमापर रखि दुनू पाएर मोड़ि कए बैसैत

सभ कियो एकठाम बैसह।

(चारू गोटे चौकीपर बैस जाइत अछि।)

अनन्तकुमार : सभकेँ अपन परिवारमे, एक सीमा धरि लाज-विचार करक चाही माइये छथुन पहिने हिनका विषएमे सुनि लाए।

(पतिक बात सुनि शान्ती देह-हाथ समेटि सांकांक्ष होइत बैइसैत। चन्द्रनाथ मूड़ी गोति लेलक। कल्याणी पिताक आँखिपर आँखि गड़ा लेलक।)

अनन्तकुमार : जहियासँ माए एलखुन तहियासँ जिनगीक अंतिम पड़ाव धरि संगे छी। गुण-अवगुण मनुष्यमे होइते अछि। मुदा सदतिकाल दुनूपर नजरि रखि गुणकेँ बढ़बैक आ अवगुणकेँ कम करैक कोशिस करैक चाही। जइसँ नीक रास्ता पकड़ि आगू बढ़ब।

कल्याणी : ई तँ बड़ कठिन काज छी, बाबू।

अनन्तकुमार : *(मुस्की दैत)* हँ, ई विवेकक काज छी। अही दुआरे मनुष्य सभ जीवसँ उपर भेल। ओना उपर होइक दोसरो कारण ई अछि जे धरतीपर जते जीव-जन्तु अछि तैमे मनुष्य अंतिम रूप छी।

कल्याणी : माइक चरचा करए लगलिऐ?

अनन्तकुमार : हँ। देखहक, ऐ धरतीपर अनेको लोक अछि। जेकर सीमा निर्धारित कर्म आ ज्ञान केने अछि। ऐ अर्थमे माए बहुत दूर छथुन। मुदा अहूँ अवस्थामे आत्मा माने विवेक सएह कहैए जे अखनो धरि दोसराक पैतपाल करैक शक्ति छन्हि।

चन्द्रनाथ : *(मूड़ी उठा)* एते दिन किअए......?

अनन्तकुमार : हँ, ठीके तूँ पूछए चाहै छह। जहिना माली, बिना फूलक बीआ देखनौं पात देख, बुझि जाइत अछि जे ई अमुक फूलक गाछ छी। तहिना कल्याणीकेँ देख विवेक जगि गेल।

चन्द्रनाथ : एते दिन विवेक सुतल छलै?

अनन्तकुमार : नै बौआ, जहिना आमक गाछक जड़िमे जनमल तुलसी गाछक बाढ़ि ठमकि जाइत अछि तहिना ठमकि गेल छलै। मुदा कल्याणीक आँखिक ज्योति जहिना सुनयनाक बेटी सीताक छलनि तहिना बुझि पड़ैए। तँए अनायास विवेक पोनगि गेल।

कल्याणी : माए, बाबूक संग अहूँ असिरवाद दिअ।

शान्ती : अखन धरि जे डीह, पुरखाक कएल काजक इतिहास छी ओकरा जीबित दुनू भाए-बहिन मिल राखब।

कल्याणी : झाँपल-तोपल बात अहाँक नै बुझि सकलौं।

शान्ती : हम तँ बेसी-बिसरिये गेलौं। बाबूए कहथुन।

अनन्तकुमार : बेटी कल्याणी, पहिने परिवार बुझि लहक। तूँ दुनू भाए-बहिन छह। जहिना तूँ घरसँ निकलि दोसर घर जेबह तहिना दोसरा घरसँ अपनो घर औतीह। ऐसँ मनुष्यक स्थानान्तर (ट्रान्जेक्शन) शुरू भेल। ओना अपनो परिवारमे लड़का-लड़की होइत (जन्म) अछि, किअए दोसर परिवारसँ संबंध जोड़ल जाइत अछि?

(चन्द्रनाथ बहीनि दिस हाथ बढ़ौलक, कल्याणी भाइक हाथमे हाथ रखलक। माटिक मूर्ति जकाँ अनन्तकुमार देखैत। अपने मने शान्ती बरबराए लगलीह)

शान्ती : सासु-ससुरक बनौल परिवारकेँ अखन धरि निमाहि रहल छी। जहिना बूढ़ा दुआरपर आएल अभ्यागतकेँ बिना हँसौने नै जाइ दै छेलखिन तहिना अखन धरि निमाहल।

कल्याणी : ई तँ काजक भार भेल, माए। मुदा असिरवादो ने चाही?

शान्ती : बेटी, सामाक माए-बाप जकाँ, तोहर माए-बाप नै छथुन। जहिना सामाक लेल चकेबा सभ किछु त्यागि संग पुरलक तहिना तोरो भाए करथुन।

(चन्द्रनाथकेँ भारसँ दबैत देख अनन्त कुमार)

अनन्तकुमार : हँ, कहै छेलियह। जहिना कम्पोजिट (शंकर) बीज उन्नतिशील होइत तहिना मनुष्योक प्रक्रिया अछि। (बात बदलैत) सदतिकाल माए माथ खोड़ैत रहै छथुन जे किअए बेटीक (कल्याणीक) वियाह अनठौने छी। मुदा हम अनठौने कहाँ छी।

कल्याणी : *(आँखिलाल केने)* बाबू......।

अनन्तकुमार : *(मुस्कुराइत)* बेटी हुनको विचार अधला नहिये छन्हि। बेटीक प्रति माएक ममता वेसी होइ छै। मुदा पिरवारमे वियाह साधारण काज नै छी। तहूमे अखन, सभ तरहक संक्रमणक प्रक्रिया चलि रहल अछि।

चन्द्रनाथ : की संक्रमण?

अनन्तकुमार : पहिने अपन इतिहास बुझि लाए। अदौमे स्वयंवर प्रथाक चलनि छल। जहिक माध्यमसँ माए-बाप बेटा-बेटीकँ भार दऽ देलकनि। मुदा आइ की देखैत छहक जे तते ओझरी लगि गेल जे जते सोझरबैक रस्ता अपनौल जाइत अछि ओते ओझरी बेसयाइये जाइ छै।

कल्याणी : बाबू, हमहूँ अबोध बच्चा नै छी बालिग भेलौं। तँए......।

अनन्तकुमार : बिल्कुल ठीक सोचै छह। जखन महिलामे पेंइतालीस-पचास बर्ख धरि सन्तान उत्पन्न करैक शक्ति रहैत अछि तखन कम उम्रमे वियाह तँ बड़ जरूरी नहिये भेल?

कल्याणी : असिरवाद दिअ। समाजक बीच किछु करैक जिज्ञासा भऽ गेल अछि।

अनन्तकुमार : बेटी, हृदेसँ असिरवाद दै छिअह। जहिना अदौमे कोनो अछुत जाति जखन कोनो गाममे प्रवेश करैत छल तखैन कोनो एहेन बाजा बजबैत छल जे लोक बुझि जाइत छलै।

कल्याणी : *(चकोना होइत)* की कहि देलिऐ?

अनन्तकुमार : पुरना गप कहलियह। आब तँ गीताक युग एलै। तँए जहिना कृष्ण कुरूक्षेत्रमे शंखक अवाजसँ अपन जानकारी दैत छलखिन्ह। तहिना......।

कल्याणी : *(आँखि-कान चकोना करैत चारू भाग देख)* कने बुझा कऽ कहियौ?

अनन्तकुमार : समाजमे किछु करए चाहै छह तँ काल्हिये बेरू पहर दुर्गास्थानमे बैसार करह।

कल्याणी : कािल्हसँ नीक जे रवि दिन बैसार करब नीक रहत। ओइमे नोकरियो चाकरियो सभ रहताह।

अनन्तकुमार : नोकरी-चाकरी कए कऽ जे गामक नास केलक ओकरा बुते गाम बनौल हएत। जहिना भिनसुरके सूर्य देखलासँ दिन भरिक अनुमान लोक कऽ लैत अछि तहिना मनुक्खक किरदानिये देख कऽ मनुक्खकेँ चिन्हए पड़तह।

कल्याणी : हुनका बुते केना गामक विचार कएल हेतनि।

अनन्तकुमार : *(खिसिया कऽ)* दिल्ली सरकारमे सभसँ बेसी बिहारक रेलमंत्री भेलाह। मुदा की देखै छहक? जकरा तूँ अबोध कहै छहक ओकर जिनगियो छोट छै। जिनगीक समस्यो कम होइत अछि।

कल्याणी : अखने जा कऽ ढोलियाकेँ ढोलहो दैले कहि अबैत छियनि। साँझू पहर ढोलहो दऽ देब।

पाँचम दृश्य-

(दुर्गास्थानक आगूमे एक भाग पुरूष एक भाग महिला बैसल। एकटा डायरी, पेन नेने महिला दिससँ आगूमे कल्याणी-प्रतिज्ञा। पुरूष दिससँ सूर्यदेव, क्षितिजदेव, निसकान्त बैसल।)

सूर्यदेव : आजुक बैसारक लेल कल्याणी आ प्रतिज्ञाकेँ हृदेसँ शुभकामना दैत छियनि जे एकटा नव परम्पराक शुभारंभ केलनि। आशा संग आगू बढ़ति सएह शुभकामना।

कल्याणी : भाय सहाएब, अहाँ सभ तरहेँ अगुआएल छी तँए आगूक बाटक जते ज्ञान अहाँकेँ अछि ओते हम थोड़े बुझै छी।

(बिचहिमे निसकान्त)

निसकान्त : सुरजू भाय, हमरो बात सुनि लिअ। काल्हिये दुनू परानीक झगड़ाक पनिचैतीमे गेल छलौं। बेचारा विसनाथकेँ देखते छिऐ जे डेढ़ सौ रूपैयाक कमाइ घर जोड़ैयामे करैए। सभ दिन कमा कऽ अबैए आ घरवालीक हाथमे दऽ दैत छै। घरवाली केहेन जे टी.भी. कीनैले पाइ जमा करैत जाइए। रौद-बसातमे काज करैबलाकेँ एकटा

गंजीसँ थोड़े पाड़ लगतै। तैले घरवाली पाइये ने दैत अछि।

कल्याणी : *(मूड़ी डोलबैत)* की पनचैती केलिऐ?

निसकान्त : सँए-बहूक झगड़ा पंच लबरा। हम नै बुझै छिऐ जे पावरक लड़ाइ छी। दुनू गोटेकेँ थोड़-थाम लगा देलिऐ। दू विचारक लड़ाइ हमरे बाप बुते फड़िआएल हएत।

सूर्यदेव : अच्छा एकटा कहऽ जे दुनू गोटेमे घरक गारजन के छी?

निसकान्त : उँ-हूँ सौंसे गामेमे सबहक घरमे मौगियेक जुति अछि। एहेन जे लोकक दशा भेल छै से किअए? कमाइ छै कोइ, हुकुम ककरो। कोनो घर आकि कोनो गाम, जाबे मरदक जुतिमे नै चलत ताबे ओहिना गाम आगू मुँहे ससरि जाएत।

कल्याणी : कविलाहाक खेल देखबै। दिन पनरहम गुरूकाका कानि-कानि कहैत रहथि जे सभ दिन परदा-पौसकेँ मानलौं। पुतोहू जनीकेँ बेटा नोकरी लगा देलकनि। दस कोसपर स्कूल छन्हि। दुनू परानी भिनसरसँ खाइ-पीबै राति धरि घुमि कऽ अबै छथि। बेटा तँ बेटा भेल मुदा पुतोहूक सेवा सासु कहनि, ई हमरा पसन्द नै अछि?

सूर्यदेव : ई नै पुछलहुन जे समए एना किअए भेल?

निसकान्त : आठ घंटा खटनीक बाद जे समए बचैए- ततबे ने समाजमे समए लगाएब ओते जे पुच्छा-पुच्छी करैए लगब, से ओते निचेन रहै छी।

कल्याणी : भैया, नारीकेँ बराबर अधिकारक हवा चलि रहल अछि से की?

सूर्यदेव : मदारी सबहक खेल छी। नारी, पुरूषसँ हीन केना बनैत गेल? जाधरि ऐ इतिहासकेँ नै देखब ताधरि कारण केना पाएब। ककरोसँ अधिकार मंगबै? ऐ लेल विकासक प्रक्रियाकेँ नीक जकाँ बुझए पड़त

कल्याणी : काज केना शुरू कएल जाए, भाय।

सूर्यदेव : बहुत बातक जरूरत अखन नै अछि। मुदा किछु बात कहि दैत छी। पहिल-नारीकेँ चिन्हए लेल नजरि ओतऽ दिअए पड़त जइठाम हवाइ जहाजमे उड़ैत, इलाइची फोड़ि-

फोड़ि मुँहमे दैत जिनगी अछि तँ दोसर दिस भरि-भरि छाती पानि टपि (खच्चा, धार) भीजल कपड़ा पहीरि गोबर बिछैक जिनगी अछि।

कल्याणी : *(नम्हर साँस छोड़ैत)* अद्भुत बात भाय अहाँ कहलौं।

सूर्यदेव : कल्याणी, अहाँ अखन फुलाइत फुलक कली छी। तँए जरूरत अछि शुद्ध माटि-पानिक। प्रत्येक साल समाजमे माने गाममे साएसँ उपर आन गामक बेटी अबैत छथि। गामक बेटी जेबो करैत छथि। प्रश्न उठैत सिर्फ देहेटा अबैत-जाइत आकि लूरि-बुद्धि सेहो अबैत जाइत अछि।

कल्याणी : अखन तँ आरो विकट भऽ गेल अछि जे देशक एक कोनसँ दोसर कोनमे रहनिहारक (पालल-पोसल) बीच संबंध स्थापित रहल। जैसँ खान-पान, बात-विचार लूरि-ढंग सभ टकरा रहल अछि।

सूर्यदेव : एहिना खाइ-पीबैमे देखियौ। एक आदमीक (परिवारक) एक दिनक खर्च जते होइत अछि दोसर दिस ओहन परिवारक भरमार अछि जै परिवारमे दसो-बर्खक आमदनी ओते नै छै। ककरो असली नोर चुबै तब ने से तँ पियौजक झाँसक नोर चुबबैए।

कल्याणी : खेती-बाड़ीक की स्थिति अछि?

सूर्यदेव : सरकार मेला लागल। गाममे चारिटा ट्रेक्टर चलि आएल। एक तँ बाढ़िमे बारह आना बड़द गाममे मरि गेल, दोसर जे चारि आना बचल ओहो सभ गोबर उठबै दुआरे बेचि लेलनि। अखन गाममे एकोटा बड़द नै अछि। ले बलैया ट्रेक्टर कदबामे सकबे ने करै छै। खेती कोनो हएत?

कल्याणी : अजीव-अजीव बात सभ कहै छी, भैया?

सूर्यदेव : कते कहब बहिन। जते खर्चमे पहिने लोक प्रोफेसर बनै छलाह तते अखन बच्चाक स्कूलमे खर्च हुअए लगल अछि। ककर बेटा पढ़त। शिक्षा केहन भऽ गेल अछि धोती-कुरताबला आ पेन्ट-कोटबला अपनामे रगड़ केने छथि जे हम नीक तँ हम नीक। के फड़ियौत? जहनकि प्रश्न नान्हिटा अछि जे जइसँ जिनगी नीक-नहाँति आगू मुँहे समैक संग ससरै।

समाप्त।

३

एकांकी

समझौता

पात्र परिचए

श्याम (इंजीनियर)

सुकान्त (इंजीनियर)

फुलेसर (मध्यम किसान)

कुसेसर

मुनेसर

रौदी

अनुप

झोली (पाँचो- बटेदार)

रूपन (कुसेसरक पत्नी)

रेखा (श्यामक पत्नी)

__पहिल दृश्य-__

(कुसेसरक आंगन)

रूपीनी : कोन लोभमे लटकल छी। गाममे देखै छी जे जेकरो ने किछु छलै ओहो सभ पजेबा घर बना लेलक। कल गड़ा लेलक। नीक-निकुत खाइए। चिक्कन-चिक्कन कपड़ा पहिरैए। अहाँ गाम-गामक रट लगौने छी।

कुसेसर : कहलौं तँ ठीके मुदा गामक लूरि छोड़ि लूरि कोन अिछ जे शहर बजार जा करब। ने गाड़ी चलबैक लूरि अछि आ ने करखानाक काजक। तखन जा कऽ की करब। खर्चा कऽ कऽ जएब आ बूलि-टहैल कऽ चलि आएव। तखन तँ आरो कर्जा लदा जएत।

रूपनी : लूरि कि कोनो लोक पेटेसँ सीख कऽ अबैए। काज करैत-करैत लूरि होइ छै। सुखदेवाकेँ कोन लूरि छलै। ढहलेल-बकलेल जकाँ गाममे रहै छलै। मति बदललै, ममियौत भाए सेने कलकत्ता गेल।

कुसेसर : सुनै छी जे आब कलकत्तामे नै रहैए। गाम ऐबो कएल तँ भेँटे ने भेल।

रूपनी : अहाँकेँ ने नै भेँट भेल। हम तँ भेँट केलिऐ। अंगनामे कुरसीपर चाह पीबैत रहए। जखने देखलक कि कुरसियेपर चाहक कप रखि आबि कऽ दुनू हाथे पकड़ि दोसर कुरसीपर बैइसैले कहलक।

कुसेसर : *(मुस्की दैत)* तब तँ अहाँ बड़का लोक भऽ गेलौं?

रूपनी : से कि कुरसीपर बैसलौं। ओसारपर शतरंजी ओछाएल रहै ओइपर बैसलौं। मुदा धैनवाद ओकरा दुनू परानीक विचारकेँ दिऐ। अपने लगमे बैस चाहो-पीबै आ रूदपुरवालीकेँ चाह-विस्कुट नेने अबैले कहलक।

कुसेसर : की सभ गप भेल?

रूपनी : कोनो कि एकेटा गप भेल। अपने खिस्सा सभ कहए लगल।

कुसेसर : अखैन कते कमाइए?

रूपनी : तेकर ठेकान छै। कहलक जे मालिक तते विसवास करैए। करखानाक मनेजरी दऽ देने अछि। ओइठीनक एक रूपैया अपना सबहक सत्तरि रूपैया होइ छै। मिहनतो करैए ते सुखो होइ छै। अपना सभ जकाँ थोड़े अछि जे पेट साधि खटू आ सुखक बेरमे टुटरूम-टुम।

कुसेसर : की करबै। ओकरा भागमे वएह लिखल छै अपना सबहक भागमे यएह लिखल अछि।

रूपनी : ककरो भाग-तकदीरमे किछु लिखल रहै छै। जँ से रहितै तँ धन ठेरी रहै छै आ बेटा हेबे ने करै छै। जँ लिखल रहितै तँ सभ कुछ ओकरे होइतै।

कुसेसर : तब की करब?

रूपनी : इंजीनियर (श्याम) सहाएबकँ समाद दऽ दिअनु जे हम खेत-तेत नै करब। हुनकर कि कोनो खेत दहा जाइ छन्हि आकि रौदीमे जरि जाइ छन्हि। जजात जरैए आ दहाइए बटेदारक। ऋृण पैंच लऽ कऽ खेती करू आ उपजाक कोन बात जे लगतो चलि जाइए।

कुसेसर : कहलौं तँ ठीके मुदा......।

रूपनी : मुदा-तुदा किछु ने। नै समाद पठेबनि तँ नै पठबिअनु। मुदा खेतक आड़िपर जएब छोड़ि दियौ। जोत-कोड़ छोड़ि दियौ। जखन गाम औता आ पुछता ते कहि देबनि।

कुसेसर : आशा तँ वएह खेत अछि?

रूपनी : की अछि? ओते महगक खाद कीनै छी, बीआ कीनै छी, खटै छी। तैपर अधा बॉटि दैत छियनि। की लाभ होइए। दूध महक डारही होइए। खटनी कम लगै छै। ओते जे बोइनपर खटब तँ ओइसँ बेसी हएत।

कुसेसर : एकठाम दस सेर भऽ जाइए। बोइनो करब से सभ दिन काजो थोड़े लगैए?

रूपनी : अपनो काज ठाढ़ कऽ लेब। जै दिन बोइन नै लागत तै दिन अपने काज करब।

कुसेसर : से कना हएत। जँ माले पोसब तँ सभ दिन ने ओकरा चरबए-बझबए पड़त। घास-भूसा करए पड़त। जै दिन काज करए जएब तै दिन अपन काज कना चलत।

रूपनी : तँ की गोला-बड़दक सेबनेसँ, जीब?

(मुनेसरक प्रवेश)

मुनेसर : कुसेसर, हौ कुसेसर।

कुसेसर : हँ, हँ भैया, अबै छी।

मुनेसर : सोहराइवाली किअए रँगल छथुन्ह?

(कुसेसर छुप्पे रहैत)

रूपनी : भैया, हम की कोनो अधला बात बजै छी?

कुसेसर : हँ भैया, अपनो मन कखनो-कखनो मानि लइए।

मुनेसर : से की?

कुसेसर : सोहराइयेवालीक सुइत (हँसुली) बन्हकी लगा कऽ खेती केने छलौं। देखते छहक जे अपना बड़दो नै अछि। हरो जनेपर लइ छी। तैपर सँ खटवो करै छी आ पूँजियो लगैए। रौदी भऽ गेल। एक्को कनमाक आशा रहल।

रूपनी : *(तरंगि कऽ)* हिनका जे कहबनि भैया से की हिनका नै होइ छन्हि। जेहने बटेदार हम तेहने तँ इहो छथि।

मुनेसर : कहलौं तँ एक-लाखक बात मुदा की उपाए?

रूपनी : छै उपाए भैया?

मुनेसर : की?

रूपनी : इंजीनियर सहाएबक खेत छियनि। दहाउ कि रौदिआउ हुनकर खेत थोड़े चलि जेतनि। मुदा हमरा सबहक तँ लगता चलि जाइए।

मुनेसर : कनियाँ, दू सेरक अशो तँ अछि।

रूपनी : एहेन आशाकँ मुँह मारौथ। अना जे चुपेचाप खेत छोड़ि देथिन तँ दोखी हेता। हुनका गाम बजा कऽ सभ बात कहबनि। कहाँदन बड़का हाकिम छथीन। बुझता तँ बड़बढ़िया नै तँ हम सभ बिना पूँजिये काहि काटब ओ अछैते पूँजिये काहि कटताह।

मुनेसर : कुसेसर, कनियाँक विचार हमरो जँचैए। दुनू गोटे बुथपर चल। मिलिये कऽ कहबनि।

(दोसर दृश्य)

(श्याम इंजीनियरक डेरा)

श्याम : *(चाह पीबैत)* कौल्हुके टिकट अछि। दस बजे गाड़ी अछि। तँए सभ कुछ सम्हारि लीअ।

रेखा : *(तमसाइत)* की सम्हारब आ की नै सम्हारब। हजारो दिन कहलौं जे गामक खेत बेच लिअ, तँ जी गारल अछि।

श्याम : कोनो की खगैए जे बेच कऽ गुजर करब। बाप-पुरखाक अरजल छियनि, जाधरि रहतनि ताधरि ने लोक नाम लेतनि जे फल्लांक छियनि। ततवे नै अपन लगिते कि अछि मुदा साल भरिक बुतात (चाउर-दालि) तँ चलिते अछि।

रेखा : भरि दिन तँ हिसावे जोड़ै छी कने जोड़ि कऽ देखलिऐ जे कते पूँजीसँ कते आमदनी होइए।

श्याम : सभठाम हिसावे जोड़ने थोड़े काज होइए। इलाकाक-इलाकामे रौदी भऽ जाइ छै, दहार भऽ जाइ छै। अरबो-खरबोक पूँजीसँ एको-पाइ आमदनी नै होइ छै, से लोक बरदास करिते छथि आ हम......।

रेखा : जिनका दोसर रास्ता नै छन्हि ओकि करताह। मुदा अपना तँ अछि।

श्याम : मिथिलाकेँ दिनयाँ देवलोक बुझैए। तइठाम हम छोड़ि कऽ पड़ा जाउँ।

रेखा : हमर बात कहिया सुनलौं जे आइ सुनब।

श्याम : कहिया नै सुनलौं?

रेखा : कहिया सुनलौं?

श्याम : जँ नै सुनलौं तँ आन दिन कहाँ कहियो ई बात कहलौं।

(सुकान्तक प्रवेश)

सुकान्त : भजार छी यौ?

श्याम : हँ, हँ भजार, आउ-आउ। बहुत दिन अहाँ जीब?

सुकान्त : विचारे कऽ रहल छलौं जे अहाँसँ भेँट करी। काल्हि गाम जएब।

सुकान्त : किअए?

श्याम : बटेदार सभ अबैले कहलक अछि।

रेखा : कहै छियनि जे कोन लपौड़ीमे पड़ल छी। गामक सभ खेत बेच कऽ अहीठाम मकान बना लिअ। पूँजी ने पूँजी बनबैत अछि। जते सम्पति गाममे अछि ओ जँ ऐठाम आनि चलाएव तँ ओहिसँ कते बर आमदनी हएत।

(रेखाक बात सुनि सुकान्त मूड़ी डोलबैत। मुदा किछु बजैत नै।)

श्याम : भजार, गुम्म किअए छी?

सुकान्त : ई प्रश्न अपनो संग उठल अछि। मुदा.....?

श्याम : मुदा की?

सुकान्त : जे बात कहि रहल छथि ओ अपनो छल। मुदा रूकि गेलौं।

श्याम : रूकि किअए गेलौं?

सुकान्त : ठीके कहब छैक जे जते लोक तते विचार। मुदा नीक अधलाक विचार तँ करै पड़त।

श्याम : समाजक पढ़ल-लिखल (वुद्धिजीवी वर्ग) लोक तँ अपने सभ छी, अगर अपने सभ आँखि मूनि काज करब तँ जे कम पढ़ल-लिखल वा नै पढ़ल अछि ओ कि करत? तँए ने अहाँसँ पूछैक प्रयोजन।

सुकान्त : की करब अहाँ से तँ हमरा कहने नै करब। मुदा अपन कएल काज कहै छी।

श्याम : हँ, सएह कहू।

सुकान्त : पत्नी लग बजलौं जे गामक खेत बेच एतै आनि खेत कीनि घर बना भाड़ापर लगा देब। कोनो कारोवार जे करए जाहब से तँ नै भऽ सकैए। नोकरियोक ड्यूटी एहेन अछि जे चूर-चूर भऽ जाइ छी।

श्याम : की केलौं?

सुकान्त : पत्नी कहलनि जे खेत-पथार अहाँक कीनल तँ नै छी तखन बेचब किअए। स्त्रीगणक स्वभाव हम बुझै छी। अखन भलेहिं बेच कऽ लऽ आनू मुदा जे स्त्रीगणक गाममे आब औती ओ कि बजती?

रेखा : की बाजत? ककरो बजने कि हेतइ?

श्याम : की बजती?

सुकान्त : अपने नै बुझै छलौं मदुा पत्नी कहलनि जे किछुए दिनक पछाति घरारी घरारिये रहत से बात नै। बाड़ी-चौमास भऽ जाएत। जे कीनत ओ भट्टा उपजाओत कि परती बनाएत तेकर कोनो ठीन छै।

श्याम : हँ, से तँ नहिये छै।

सुकान्त : ककरो कियो मुँहमे ताला लगौत। बाजत जे कुकर्मीक घरारी छिऐ तँए नढ़ियो भुकै छै वा भट्टा उपजाओल जाइ छै।

श्याम : *(नमहर साँस छोड़ैत)* फेर की केलिऐ?

सुकान्त : मन औना गेल। पुछलियनि तँ कहलनि जे पनरहो बीघा जमीन गौआँक बीत दए दिअनु। ओ सभ अदलि-बदलि एकठाम कऽ हाइ स्कूल बना लेता। अहाँ तँ नोकरी करिते छी। जाधरि जीब ताधरि भार तँ सरकार नेनहि अछि।

श्याम : अहाँक काज हमरो जँचैए।

रेखा : कौआसँ खैर लुटाएब कोन कबिलती भेल?

सुकान्त : एक्के काजकेँ लोक, अपन-अपन विचारे कते रंगक बुझैए। अपन कएल काज कहलौं। अहाँकेँ मीठ लगए वा तीत ई तँ अहाँक जिह्वा कहत।

रेखा : जिह्वा तँ सबहक एक्के रंग होइ छै?

सुकान्त : देखैमे भलेहिं एक रंग होइ मुदा सुआद फुट-फुट होइ छै। जँ से नै होइतै तँ सभकेँ सभ जीज एक्के रंग लगितै।

(तृतीय दृश्य)

(गाम। कुसेसर, मुनेसर, फुलेदेब, श्याम आ तीन-चारिटा आरो बटेदार)

फुलदेव : श्याम भाय, गाममे हमरा सभकेँ जीब कठिन भऽ गेल अछि। हरीयरी अहाँ सभकेँ अछि।

श्याम : नोकरीमे कि कोनो लज्जति रहल। समए छल जखन लोक हकिमानी करैत छल आ अपना जकाँ खाइत छल। आब तँ निच्चाँ-उपर मालिके-मालिक।

फुलदेव : *(हँसैत)* एहेन उटपटाँग बात किअए कहलौं?

श्याम : सिर्फ दरमाहापर आश्रित छी। ओना दरमेहे तते अछि जे नै किछु बुझि पड़ैए। लोन लऽ कऽ घर बनेलौं।

फुलदेव : कते लोन अछि?

श्याम : पैछला मास सठि गेल। ऐल-फैल घर अछि चारिटा कोठरी भड़ो लगौने छी। जइसँ परिवारक खर्च निकलि जाइए।

फुलदेव : तब तँ दरमाहा बँचबे करत।

श्याम : हँ।

फुलदेव : भगवान करथि कतौ रही चैनसँ रही।

श्याम : बच्चा सभकेँ पढ़बैमे बड़ खर्च होइए।

फुलदेव : खर्च करै छी कि अपन भार उतारै छी। आब गप आगू बढ़ाउ, कुसेसर।

कुसेसर : फुलदेव भाय, अहूँ किसान छी। दस बीघा खेत जोतै छी। खेतीक सभ भाँज बुझै छी। कते लगता खेतीमे लगै छै से अहाँसँ छिपल अछि।

फुलदेव : झाँपि-तोपि कऽ नै बाजू। खोलि कऽ साफ-साफ बाजू।

मुनेसर : फुलदेव बौआ, कुसेसर बजैमे धकाइए। हम कहै छी। इंजीनियर सहाएब पाँचटा बटेदार छी। अखैन धरि अधा-अधी उपजा बँटैत एलियनि। मुदा बेर-बेर रौदी दाही होइए। हिनकर (श्यामक) तँ किछु नै। बिगड़ैत छन्हि। उपजा नै होइ छन्हि। खेत तँ बँचले रहै छन्हि। मुदा हमरा सबहक तँ सभ कुछ चलि जाइए।

श्याम : अहाँ सभ अधा बाँटि कऽ की हमरेटा दै छी। आकि सभकेँ-सभ दैत छै। जे अदौसँ अछि।

फुलदेव : जे समए बीत गेल ओ तँ बीत गेल। पुन: घुरत नै। मुदा आँखियो मुनि कऽ जीब उचित नै।

मुनेसर : ओते चिक्कारीमे गप करैक कोन जरूरी अछि। सोझ-साझ बात सुनू। सभ दिनसँ बटाइ करैत एलौं। जे नीक की अधला भेल, भेल। बिना कहने छोड़ि दैतयनि से नीक नै होइत तँए सोझामे कहै छियनि जे हम सभ बटाइ नै करब।

फुलदेव : एना औगुता कऽ किअए बजै छी। कोनो रोग दवाइ केने छुटैए। हँ, समाजमे ई रोग भारी अछि। भने सभ बैसले छी किअए ने विचारि कऽ रास्ता निकालि लेब। गामक जमीन गामेक लोक उपजाओत।

श्याम : फुलदेव, पत्नीक विचार छन्हि जे बेच लिअ। मुदा एकटा दोस्त छथि ओ कहलनि जे अपन जमीन समाजकेँ सुमझा देलियनि। बातो सत्य जे जे गाममे रहताह गाम हुनकर छियनि। तँए खेतीक बात बुझै नै छी अहाँ सभ उिचत रास्ता निकालि कहू, मानि लेब।

फुलदेव : कते गोटे स्कूल बनबैत छथि, कते गोटे अस्पताल। समाजमे एकरो जरूरत अछि। मुदा सभसँ प्रमुख जरूरी अछि जे गामक सम्पति (जमीन) केँ समुचित उपाए कए उपजा बढ़ाओल जाए।

श्याम : उपजा केना बढ़त?

फुलदेव : बारह मासक सालमे सिर्फ वर्षे मौसम एहेन अछि जे सालो भरिकेँ प्रभावित करैत अछि। खूब बरखा भेल दहार भेल। नै बरखा भेल रौदी भेल। सालो भरि खेतिहर त्राहि-कृष्ण करैत रहह।

मुनेसर : फुलदेव बौआ, अहाँ देखते छी जे दूटा हाथ-पाएर छोड़ि किछु अछि नै। तँए कि हमसब ऐ गामक नै कहाएब से बात तँ नै अछि। इंजीनियर सहाएब, सभ तरहेँ सम्पन्न छथि मुदा छिआह तँ अही गामक। तँए......।

श्याम : तँए कि?

फुलदेव : श्याम बाबू, अहाँ सिर्फ माटि बटेदारकँ देने छिऐ। मुदा माटिसँ उपजा केना हएत? ऐ बातपर विचार करए पड़त।

श्याम : जहाँ धरि संभव हएत, करैले तैयार छी।

फुलदेव : बीस बीघा जमीन अछि। दूटा बोंरिग आ एकटा दमकल कीनि बटेदारकँ दए दियौ। जखन पानि हाथमे आबि जएत तखन बाढ़ि-रौदीक संकट कमि जाएत। आठ मासक विसवासू खेती आ चारि मास अधा भऽ जएत। दहार नै रोकि सकब तँ रौदीसँ बचाओल जा सकैत अछि।

श्याम : बड़बढ़ियाँ।

बटेदार : एतवेटा सँ नै हएत। मोटा-मोटी यएह बुझू जे अहाँ सबहक (बटेदार सबहक) शरीर आ इंजीनियर सहाएबक पूँजी रहतनि। तँए आरो किछु पूँजी लगबैक जरूरत छन्हि।

श्याम : से की?

फुलदेव : खेत जोतैले बड़द, नीक बीआ आ खादक ओरियान सेहो कऽ दियौ।

श्याम : बड़बढ़ियाँ। मुदा हमरा वापसी कि हएत?

फुलदेव : खेतसँ लऽ कऽ दमकल-बोरिंग, बरद, खाद-बीआ लगा सभ पूँजी भेल। बैंकक जे सूद छै ओकरा धियानमे राखि वापसी हएत।

मुनेसर : कि इंजीनियर सहाएब, मंजूर अछि?

श्याम : अहाँ सभ कहू।

कुसेसर : ए-मस्त।

फुलेसर : जँ स्वीकार भेल तँ सभ थोपड़ी बजा....।

(सभ थोपड़ी बजा निर्णएकेँ स्वीकार केलनि।)

(समाप्त)